# قرآن مجید

## लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

# اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ

## पारा - 17

اٰيَاتُهَا: 112 — 21 سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ 73 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| اِقْتَرَبَ | لِلنَّاسِ | حِسَابُهُمْ | وَهُمْ | فِيْ غَفْلَةٍ | مُّعْرِضُوْنَ ۚ (1) | مَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क़रीब आ गया | लोगों के लिए | हिसाब उनका | और वो | ग़फ़लत में | ऐराज़ करने वाले हैं | नहीं |

| يَاْتِيْهِمْ | مِّنْ ذِكْرٍ | مِّنْ رَّبِّهِمْ | مُّحْدَثٍ | اِلَّا | اسْتَمَعُوْهُ | وَهُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आता उनके पास | कोई ज़िक्र | उनके रब की तरफ़ से | नया | मगर | वो सुनते हैं उसे | जबकि वो |

| يَلْعَبُوْنَ ۙ (2) | لَاهِيَةً | قُلُوْبُهُمْ ؕ | وَاَسَرُّوا | النَّجْوَى ۖۗ | الَّذِيْنَ |
|---|---|---|---|---|---|
| वो खेल रहे होते हैं | ग़ाफ़िल हैं | दिल उनके | और चुपके-चुपके की | सरगोशी | उन लोगों ने जिन्होंने |

| ظَلَمُوْا ۖۗ | هَلْ | هٰذَآ | اِلَّا | بَشَرٌ | مِّثْلُكُمْ ۚ | اَفَتَاْتُوْنَ | السِّحْرَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ुल्म किया | नहीं | ये | मगर | एक इंसान | तुम्हारे जैसा | क्या फिर तुम आते हो | जादू को |

| وَاَنْتُمْ | تُبْصِرُوْنَ (3) | قٰلَ | رَبِّيْ | يَعْلَمُ | الْقَوْلَ | فِي السَّمَآءِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जबकि तुम | तुम देखते हो | कहा | मेरा रब | जानता है | हर बात को | आसमान में |

| وَالْاَرْضِ ؗ | وَهُوَ | السَّمِيْعُ | الْعَلِيْمُ (4) | بَلْ | قَالُوْٓا | اَضْغَاثُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन में | और वो | ख़ूब सुनने वाला है | ख़ूब जानने वाला है | बल्कि | उन्होंने कहा | परेशान |

| اَحْلَامٍ | بَلِ | افْتَرٰىهُ | بَلْ | هُوَ | شَاعِرٌ ۖۚ | فَلْيَاْتِنَا | بِاٰيَةٍ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़्वाब हैं | बल्कि | इसने गढ़ लिया है उसे | बल्कि | वो | शायर है | पस चाहिए कि लाए हमारे पास | कोई निशानी |

| كَمَآ | اُرْسِلَ | الْاَوَّلُوْنَ (5) | مَآ | اٰمَنَتْ | قَبْلَهُمْ | مِّنْ قَرْيَةٍ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसा कि | भेजे गए | पहले (रसूल) | नहीं | ईमान लाई थी | उनसे पहले | कोई बस्ती |

| اَهْلَكْنٰهَا ۚ | اَفَهُمْ | يُؤْمِنُوْنَ (6) | وَمَآ | اَرْسَلْنَا | قَبْلَكَ | اِلَّا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हलाक कर दिया हमने जिसे | क्या फिर वो | वो ईमान लाऐंगे | और नहीं | भेजा हमने | आपसे पहले | मगर |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُنْتُمْ | اِنْ | اَهْلَ الذِّكْرِ | فَسْـَٔلُوْٓا | اِلَيْهِمْ | نُّوْحِيْٓ | رِجَالًا |
| हो तुम | अगर | अहले ज़िक्र से | पस पूछ लो | तरफ़ उनके | हम वही करते थे | मर्दों को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الطَّعَامَ | لَّا يَاْكُلُوْنَ | جَسَدًا | جَعَلْنٰهُمْ | وَمَا | لَا تَعْلَمُوْنَ (7) |
| खाना | कि ना वो खाते हों | ऐसे जिस्म | बनाए हमने उनके | और नहीं | नहीं तुम जानते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاَنْجَيْنٰهُمْ | الْوَعْدَ | صَدَقْنٰهُمُ | ثُمَّ | خٰلِدِيْنَ (8) | كَانُوْا | وَمَا |
| पस निजात दी हमने उन्हें | वादा | सच्चा किया हमने उनसे | फिर | हमेशा रहने वाले | थे वो | और ना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَيْكُمْ | اَنْزَلْنَآ | لَقَدْ | الْمُسْرِفِيْنَ (9) | وَاَهْلَكْنَا | نَّشَآءُ | وَمَنْ |
| तरफ़ तुम्हारे | नाज़िल की हमने | अलबत्ता तहक़ीक़ | हद से बढ़ने वालों को | और हलाक कर दिया हमने | हमने चाहा | और जिसे |

ع 1 10 1

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَصَمْنَا | وَكَمْ | تَعْقِلُوْنَ (10) ع | اَفَلَا | ذِكْرُكُمْ ط | فِيْهِ | كِتٰبًا |
| तोड़ कर रख दीं हमने | और कितनी ही | तुम अक़्ल से काम लेते | क्या फिर नहीं | ज़िक्र है तुम्हारा | जिसमें | एक किताब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰخَرِيْنَ (11) | قَوْمًا | بَعْدَهَا | وَّاَنْشَاْنَا | ظَالِمَةً | كَانَتْ | مِنْ قَرْيَةٍ |
| दूसरी | क़ौमों को | बाद उनके | और उठाया हमने | ज़ालिम | थीं वो | बस्तियां |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا تَرْكُضُوْا | يَرْكُضُوْنَ (12) ط | مِّنْهَا | هُمْ | اِذَا | بَاْسَنَآ | اَحَسُّوْا | فَلَمَّآ |
| ना तुम भागो | वो भागने लगे | उनसे | वो | अचानक | अज़ाब हमारा | उन्होंने महसूस किया | तो जब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَعَلَّكُمْ | وَمَسٰكِنِكُمْ | فِيْهِ | اُتْرِفْتُمْ | اِلٰى مَآ | وَارْجِعُوْٓا |
| ताकि तुम | और अपने घरों के | जिस में | ऐश दिए गए तुम | तरफ़ उसके जो | और लौट आओ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَمَا زَالَتْ | ظٰلِمِيْنَ (14) | كُنَّا | اِنَّا | يٰوَيْلَنَآ | قَالُوْا | تُسْـَٔلُوْنَ (13) |
| तो मुसलसल रही | ज़ालिम | थे हम | बेशक हम | हाय अफ़सोस हम पर | उन्होंने कहा | तुम पूछे जाओ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | خٰمِدِيْنَ (15) | حَصِيْدًا | جَعَلْنٰهُمْ | حَتّٰى | دَعْوٰىهُمْ | تِلْكَ |
| और नहीं | बुझी हुई | जड़ से कटी हुई खेती | बना दिया हमने उन्हें | यहां तक कि | पुकार उनकी | यही |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خَلَقْنَا | السَّمَآءَ | وَالْاَرْضَ | وَمَا | بَيْنَهُمَا | لٰعِبِيْنَ (16) | لَوْ |
| पैदा किया हमने | आसमान | और ज़मीन को | और जो | उन दोनों के दर्मियान है | खेलते हुए | अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَرَدْنَآ | اَنْ | نَّتَّخِذَ | لَهْوًا | لَّاتَّخَذْنٰهُ | مِنْ لَّدُنَّآ ۖ | اِنْ | كُنَّا |
| चाहते हम | कि | हम बना लें | कोई खेल | यक़ीनन बना लेते हम उसे | अपने पास से | अगर | होते हम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فٰعِلِيْنَ (17) | بَلْ | نَقْذِفُ | بِالْحَقِّ | عَلَى الْبَاطِلِ | فَيَدْمَغُهٗ |
| करने वाले | बल्कि | हम फेंकते हैं | हक़ को | बातिल पर | पस वो सर तोड़ देता है उसका |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِذَا | هُوَ | زَاهِقٌ ؕ | وَلَكُمُ | الْوَيْلُ | مِمَّا | تَصِفُوْنَ (18) | وَلَهٗ |
| तो यकायक | वो | ज़ाइल हो जाता है | और तुम्हारे लिए | हलाकत है | उससे जो | तुम बयान करते हो | और उसी के लिए है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مَنْ | فِي السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ ؕ | وَمَنْ | عِنْدَهٗ | لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ |
| जो | आसमानों में | और ज़मीन में है | और जो | उसके पास हैं | नहीं वो तकब्बुर करते |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَنْ عِبَادَتِهٖ | وَلَا | يَسْتَحْسِرُوْنَ (19) ۚ | يُسَبِّحُوْنَ | الَّيْلَ | وَالنَّهَارَ |
| उसकी इबादत से | और ना | वो थकते हैं | वो तस्बीह करते हैं | रात | और दिन |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَفْتُرُوْنَ (20) | اَمِ | اتَّخَذُوْٓا | اٰلِهَةً | مِّنَ الْاَرْضِ | هُمْ |
| नहीं वो दम लेते | क्या | उन्होंने बना लिए हैं | कुछ इलाह | ज़मीन से | कि वो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُنْشِرُوْنَ (21) | لَوْ | كَانَ | فِيْهِمَآ | اٰلِهَةٌ | اِلَّا | اللّٰهُ | لَفَسَدَتَا ۚ |
| वो ज़िंदा करेंगे | अगर | होते | उन दोनों में | कुछ इलाह | सिवाए | अल्लाह के | अलबत्ता वो दोनों बिगड़ जाते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَسُبْحٰنَ | اللّٰهِ | رَبِّ | الْعَرْشِ | عَمَّا | يَصِفُوْنَ (22) | لَا يُسْـَٔلُ |
| पस पाक है | अल्लाह | जो रब है | अर्श का | उससे जो | वो बयान करते हैं | नहीं वो पूछा जाता |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَمَّا | يَفْعَلُ | وَهُمْ | يُسْـَٔلُوْنَ (23) | اَمِ | اتَّخَذُوْا | مِنْ دُوْنِهٖٓ |
| उसके बारे में जो | वो करता है | और वो | वो पूछे जाएंगे | या | उन्होंने बना लिए | उसके सिवा |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰلِهَةً ؕ | قُلْ | هَاتُوْا | بُرْهَانَكُمْ ۚ | هٰذَا | ذِكْرُ | مَنْ | مَّعِيَ |
| कुछ इलाह | कह दीजिए | लाओ | दलील अपनी | ये | ज़िक्र है | उनका जो | मेरे साथ है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَذِكْرُ | مَنْ | قَبْلِيْ ؕ | بَلْ | اَكْثَرُهُمْ | لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ | الْحَقَّ |
| और ज़िक्र है | (उनका भी) जो | मुझसे पहले थे | बल्कि | अक्सर उनके | नहीं वो जानते | हक़ को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَهُمْ | مُّعْرِضُوْنَ (24) | وَمَآ | اَرْسَلْنَا | مِنْ قَبْلِكَ | مِنْ رَّسُوْلٍ | اِلَّا |
| तो वो | ऐराज़ करने वाले हैं | और नहीं | भेजा हमने | आपसे पहले | कोई रसूल | मगर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نُوْحِيْٓ | اِلَيْهِ | اَنَّهٗ | لَآ | اِلٰهَ | اِلَّآ | اَنَا | فَاعْبُدُوْنِ (25) |
| हमने वही की | तरफ़ उसके | कि बेशक वो | नहीं | कोई इलाह (बरहक़) | मगर | मैं ही | पस इबादत करो मेरी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالُوا | اتَّخَذَ | الرَّحْمٰنُ | وَلَدًا | سُبْحٰنَهٗ ؕ | بَلْ | عِبَادٌ |
| और उन्होंने कहा | बना ली है | रहमान ने | औलाद | पाक है वो | बल्कि | वो बंदे हैं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مُّكْرَمُوْنَ ۙ (26) | لَا يَسْبِقُوْنَهٗ | بِالْقَوْلِ | وَهُمْ | بِاَمْرِهٖ | يَعْمَلُوْنَ (27) |
| जो इज़्ज़त दिए गए हैं | नहीं वो आगे बढ़ते उससे | बात में | और वो | उसके हुक्म पर ही | वो अमल करते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَعْلَمُ | مَا | بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ | وَمَا | خَلْفَهُمْ | وَلَا | يَشْفَعُوْنَ ۙ | اِلَّا |
| वो जानता है | जो कुछ | उनके आगे है | और जो कुछ | उनके पीछे है | और नहीं | वो शफ़ाअत करेंगे | मगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِمَنِ | ارْتَضٰى | وَهُمْ | مِّنْ خَشْيَتِهٖ | مُشْفِقُوْنَ (28) | وَمَنْ | يَّقُلْ |
| जिसके लिए | वो राज़ी हो जाए | और वो | इसकी ख़शीयत से | डरने वाले हैं | और जो कोई | कहे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْهُمْ | اِنِّيْٓ | اِلٰهٌ | مِّنْ دُوْنِهٖ | فَذٰلِكَ | نَجْزِيْهِ | جَهَنَّمَ ؕ |
| इनमें से | बेशक मैं | इलाह हूं | उसके सिवा | तो ऐसी सूरत में | हम बदले में देंगे उसे | जहन्नम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَذٰلِكَ | نَجْزِي | الظّٰلِمِيْنَ ع (29) | اَوَلَمْ | يَرَ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْٓا |
| इसी तरह | हम बदला देते हैं | ज़ालिमों को | क्या भला नहीं | देखा | उन लोगों ने जिन्होंने | कुफ़्र किया |

ع 2 19 2

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَجَعَلْنَا | فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ | رَتْقًا | كَانَتَا | وَالْاَرْضَ | السَّمٰوٰتِ | اَنَّ |
| और बनाई हमने | तो जुदा-जुदा कर दिया हमने उन दोनों को | मिले हुए | थे वो दोनों | और ज़मीन | आसमान | कि बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِى الْاَرْضِ | وَجَعَلْنَا | يُؤْمِنُوْنَ (30) | اَفَلَا | حَيٍّ ؕ | كُلَّ شَىْءٍ | مِنَ الْمَآءِ |
| ज़मीन में | और बनाया हमने | वो ईमान लाते | क्या फिर नहीं | ज़िंदा | हर चीज़ | पानी से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِجَاجًا | فِيْهَا | وَجَعَلْنَا | بِهِمْ ص | تَمِيْدَ | اَنْ | رَوَاسِىَ |
| कुशादा | उसमें | और बनाए हमने | साथ उनके | (ना) वो ढुलक जाए | कि | पहाड़ों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّحْفُوْظًا ۚ | سَقْفًا | السَّمَآءَ | وَجَعَلْنَا | يَهْتَدُوْنَ (31) | لَّعَلَّهُمْ | سُبُلًا |
| महफ़ूज़ | छत | आसमान को | और बनाया हमने | वो राह पा जाएं | ताकि वो | रास्ते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّيْلَ | خَلَقَ | الَّذِىْ | وَهُوَ | مُعْرِضُوْنَ (32) | عَنْ اٰيٰتِهَا | وَّهُمْ |
| रात | बनाया | जिसने | और वो ही है | मुंह मोड़ने वाले हैं | उसकी निशानियों से | और वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | يَّسْبَحُوْنَ (33) | فِىْ فَلَكٍ | كُلٌّ | وَالْقَمَرَ ؕ | وَالشَّمْسَ | وَالنَّهَارَ |
| और नहीं | वो तैरते हैं | (अपने) मदार में | सब के सब | और चांद को | और सूरज | और दिन को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَهُمُ | مِّتَّ | اَفَاۡئِنْ | الْخُلْدَ ؕ | مِّنْ قَبْلِكَ | لِبَشَرٍ | جَعَلْنَا |
| तो वो | आप फ़ौत होगए | क्या फिर अगर | हमेशगी | आप से पहले | किसी इंसानन के लिए | बनाई हमने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بِالشَّرِّ | وَنَبْلُوْكُمْ | الْمَوْتِ ؕ | ذَآئِقَةُ | كُلُّ نَفْسٍ | الْخٰلِدُوْنَ (34) |
| साथ बुराई | और हम मुब्तिला करते हैं तुम्हें | मौत को | चखने वाला है | हर नफ़्स | हमेशा रहने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | رَاٰكَ | وَاِذَا | تُرْجَعُوْنَ (35) | وَاِلَيْنَا | فِتْنَةً ؕ | وَالْخَيْرِ |
| वो जिन्होंने | देखते हैं आपको | और जब | तुम लौटाए जाओगे | और हमारी ही तरफ़ | आज़माने के लिए | और भलाई के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَذْكُرُ | الَّذِىْ | اَهٰذَا | هُزُوًا ؕ | اِلَّا | يَّتَّخِذُوْنَكَ | اِنْ | كَفَرُوْٓا |
| ज़िक्र करता है | वो जो | क्या ये है | मज़ाक़ | मगर | वो बनाते आपका | नहीं | कुफ़्र किया |

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خُلِقَ | كٰفِرُوْنَ ﴿36﴾ | هُمْ | الرَّحْمٰنِ | بِذِكْرِ | وَهُمْ | اٰلِهَتَكُمْ ۚ |
| पैदा किया गया | इंकारी हैं | वो | रहमान के | ज़िक्र से | हालांकि वो | तुम्हारे इलाहों का |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿37﴾ | فَلَا | اٰيٰتِيْ | سَاُورِيْكُمْ | مِنْ عَجَلٍ ؕ | الْاِنْسَانُ |
| तुम जल्दी मांगो मुझसे | पस ना | अपनी निशानियां | अनक़रीब मैं दिखाऊंगा तुम्हें | उजलत (के ख़मीर) से | इंसान |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَوْ | صٰدِقِيْنَ ﴿38﴾ | كُنْتُمْ | اِنْ | الْوَعْدُ | هٰذَا | مَتٰى | وَيَقُوْلُوْنَ |
| अगर | सच्चे | हो तुम | अगर | वादा | ये | कब है | और वो कहते हैं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَنْ وُّجُوْهِهِمُ | لَا يَكُفُّوْنَ | حِيْنَ | كَفَرُوْا | الَّذِيْنَ | يَعْلَمُ |
| अपने चेहरों से | ना वो रोक सकेंगे | जिस वक़्त | कुफ़्र किया | वो जिन्होंने | जान लें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَلْ | يُنْصَرُوْنَ ﴿39﴾ | هُمْ | وَلَا | عَنْ ظُهُوْرِهِمْ | وَلَا | النَّارَ |
| बल्कि | वो मदद दिए जाऐंगे | वो | और ना | अपनी पुश्तों से | और ना | आग को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| رَدَّهَا | يَسْتَطِيْعُوْنَ | فَلَا | فَتَبْهَتُهُمْ | بَغْتَةً | تَاْتِيْهِمْ |
| उसको रद्द करने की | वो इस्तिताअत रखते होंगे | तो ना | तो वो मबहूत/हैरान कर देगी उन्हें | अचानक | वो आ जाएगी उनके पास |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ قَبْلِكَ | بِرُسُلٍ | اسْتُهْزِئَ | وَلَقَدِ | يُنْظَرُوْنَ ﴿40﴾ | هُمْ | وَلَا |
| आपसे पहले | कई रसूलों का | मज़ाक़ उड़ाया गया | और अलबत्ता तहक़ीक़ | वो मोहलत दिए जाऐंगे | वो | और ना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهٖ | كَانُوْا | مَّا | مِنْهُمْ | سَخِرُوْا | بِالَّذِيْنَ | فَحَاقَ |
| जिसका | थे वो | उसने जो | उनमें से | मज़ाक़ उड़ाया | उनको जिन्होंने | तो घेर लिया |

ع 3 12 3

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَالنَّهَارِ | بِالَّيْلِ | يَّكْلَؤُكُمْ | مَنْ | قُلْ | يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿41﴾ ع |
| और दिन को | रात | निगहबानी कर रहा है तुम्हारी | कौन | कह दीजिए | वो मज़ाक़ उड़ाते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمْ | مُّعْرِضُوْنَ ﴿42﴾ | رَبِّهِمْ | عَنْ ذِكْرِ | هُمْ | بَلْ | مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ |
| या | ऐराज़ करने वाले हैं | अपने रब के | ज़िक्र से | वो | बल्कि | रहमान से |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| لَهُمْ | اٰلِهَةٌ | تَمْنَعُهُمْ | مِّنْ دُوْنِنَا ؕ | لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ | نَصْرَ |
|---|---|---|---|---|---|
| उनके लिए | कुछ इलाह हैं | जो बचाते हैं उन्हें | हमारे सिवा | नहीं वो इस्तिताअत रखते | मदद की |

| اَنْفُسِهِمْ | وَلَا | هُمْ | مِّنَّا | يُصْحَبُوْنَ ﴿43﴾ | بَلْ | مَتَّعْنَا | هٰٓؤُلَآءِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जानों की | और ना | वो | हमारी तरफ़ से | वो साथ दिए जाते हैं | बल्कि | फ़ायदा दिया हमने | उन लोगों को |

| وَاٰبَآءَهُمْ | حَتّٰى | طَالَ | عَلَيْهِمُ | الْعُمُرُ ؕ | اَفَلَا | يَرَوْنَ | اَنَّا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उनके आबा ओ अजदाद को | यहां तक कि | लम्बी हो गई | उन पर | उम्र | क्या फिर नहीं | वो देखते | कि बेशक हम |

| نَاْتِي | الْاَرْضَ | نَنْقُصُهَا | مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ | اَفَهُمُ | الْغٰلِبُوْنَ ﴿44﴾ |
|---|---|---|---|---|---|
| हम आते हैं | ज़मीन को | हम घटाते हैं उसे | उसके किनारों से | क्या फिर वो | ग़ालिब आने वाले हैं |

| قُلْ | اِنَّمَآ | اُنْذِرُكُمْ | بِالْوَحْيِ ۖ | وَلَا | يَسْمَعُ | الصُّمُّ | الدُّعَآءَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कह दीजिए | बेशक | मैं डराता हूं तुम्हें | साथ वही के | और नहीं | सुना करते | बहरे | पुकार को |

| اِذَا مَا | يُنْذَرُوْنَ ﴿45﴾ | وَلَئِنْ | مَّسَّتْهُمْ | نَفْحَةٌ | مِّنْ عَذَابِ |
|---|---|---|---|---|---|
| जब भी | वो डराए जाते हैं | और अलबत्ता अगर | छू जाए उन्हें | एक झोंका | अज़ाब से |

| رَبِّكَ | لَيَقُوْلُنَّ | يٰوَيْلَنَآ | اِنَّا | كُنَّا | ظٰلِمِيْنَ ﴿46﴾ | وَنَضَعُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आपके रब के | अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे | हाय अफ़सोस हम पर | बेशक हम | थे हम ही | ज़ालिम | और हम रख देंगे |

| الْمَوَازِيْنَ | الْقِسْطَ | لِيَوْمِ | الْقِيٰمَةِ | فَلَا | تُظْلَمُ | نَفْسٌ | شَيْـًٔا ؕ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तराज़ू | इंसाफ़ वाले | दिन | क़यामत के | तो ना | ज़ुल्म किया जाएगा | किसी नफ़्स पर | कुछ भी |

| وَاِنْ | كَانَ | مِثْقَالَ | حَبَّةٍ | مِّنْ خَرْدَلٍ | اَتَيْنَا | بِهَا ؕ | وَكَفٰى |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगरचे | हो वो | बराबर | दाने | राई के | हम ले आएंगे | उसे | और काफ़ी हैं |

| بِنَا | حٰسِبِيْنَ ﴿47﴾ | وَلَقَدْ | اٰتَيْنَا | مُوْسٰى | وَهٰرُوْنَ | الْفُرْقَانَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम | हिसाब लेने वाले | और अलबत्ता तहक़ीक़ | दिया हमने | मूसा | और हारून को | फुरक़ान |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَضِيَآءً | وَّذِكْرًا | لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ 48 | الَّذِيْنَ | يَخْشَوْنَ | رَبَّهُمْ | بِالْغَيْبِ |
| और रोशनी | और ज़िक्र | मुत्तक़ी लोगों के लिए | वो जो | डरते हैं | अपने रब से | ग़ायबाना तौर पर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَهُمْ | مِّنَ السَّاعَةِ | مُشْفِقُوْنَ 49 | وَهٰذَا | ذِكْرٌ | مُّبٰرَكٌ |
| और वो | क़यामत से | डरने वाले हैं | और ये है | ज़िक्र | बा बरकत |

ع 4 9 4

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْزَلْنٰهُ ؕ | اَفَاَنْتُمْ | لَهٗ | مُنْكِرُوْنَ ع 50 | وَلَقَدْ | اٰتَيْنَآ | اِبْرٰهِيْمَ |
| नाज़िल किया हमने उसे | क्या फिर तुम | उसका | इंकार करने वाले हो | और अलबत्ता तहक़ीक़ | दी हमने | इब्राहीम को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رُشْدَهٗ | مِنْ قَبْلُ | وَكُنَّا | بِهٖ | عٰلِمِيْنَ ج 51 | اِذْ | قَالَ | لِاَبِيْهِ |
| समझ बूझ उसकी | इससे क़ब्ल | और थे हम | उसे | जानने वाले | जब | उसने कहा | अपने बाप से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَوْمِهٖ | مَا | هٰذِهِ | التَّمَاثِيْلُ | الَّتِيْٓ | اَنْتُمْ | لَهَا | عٰكِفُوْنَ 52 |
| और अपनी क़ौम से | क्या हैं | ये | मूर्तियां | वो जो | तुम | तरफ़ उसके | जम कर बैठने वाले हो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالُوْا | وَجَدْنَآ | اٰبَآءَنَا | لَهَا | عٰبِدِيْنَ 53 | قَالَ | لَقَدْ | كُنْتُمْ |
| उन्होंने कहा | पाया हमने | अपने आबा ओ अजदाद को | इनकी | इबादत करने वाले | उसने कहा | अलबत्ता तहक़ीक़ | हो तुम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْتُمْ | وَاٰبَآؤُكُمْ | فِيْ ضَلٰلٍ | مُّبِيْنٍ 54 | قَالُوْٓا | اَجِئْتَنَا | بِالْحَقِّ |
| तुम | और आबा ओ अजदाद तुम्हारे | गुमराही में | खुली | उन्होंने कहा | क्या तू लाया है हमारे पास | हक़ को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمْ | اَنْتَ | مِنَ اللّٰعِبِيْنَ 55 | قَالَ | بَلْ | رَّبُّكُمْ | رَبُّ | السَّمٰوٰتِ |
| या | तू | दिल्लगी करने वालों में से है | कहा | बल्कि | रब तुम्हारा | रब है | आसमानों |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاَرْضِ | الَّذِيْ | فَطَرَهُنَّ ۖ | وَاَنَا | عَلٰى | ذٰلِكُمْ | مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ 56 |
| और ज़मीन का | जिसने | पैदा किया है इन्हें | और मैं | ऊपर | इसके | गवाहों में से हूं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَتَاللّٰهِ | لَاَكِيْدَنَّ | اَصْنَامَكُمْ | بَعْدَ | اَنْ | تُوَلُّوْا | مُدْبِرِيْنَ 57 |
| और क़सम अल्लाह की | अलबत्ता मैं ज़रूर चाल चलूँगा | तुम्हारे बुतों से | इसके बाद | कि | तुम चले जाओगे | पीठ फेरकर |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَيْهِ | لَعَلَّهُمْ | لَّهُمْ | كَبِيْرًا | اِلَّآ | جُذٰذًا | فَجَعَلَهُمْ |
| उसकी तरफ़ | शायद कि वो | उनके | एक बड़े के | सिवाय | टुकड़े-टुकड़े | तो उसने कर दिया उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّهٗ | بِاٰلِهَتِنَآ | هٰذَا | فَعَلَ | مَنْ | قَالُوْا | يَرْجِعُوْنَ (58) |
| यक़ीनन वो | साथ हमारे इलाहों के | ये | किया है | किसने | उन्होंने कहा | वो रुजूअ करें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهٗٓ | يُقَالُ | يَّذْكُرُهُمْ | فَتًى | سَمِعْنَا | قَالُوْا | لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (59) |
| उसे | कहा जाता है | वो ज़िक्र करता था उनका | एक नौजवान को | सुना हमने | उन्होंने कहा | अलबत्ता ज़ालिमों में से है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَعَلَّهُمْ | النَّاسِ | عَلٰٓى اَعْيُنِ | بِهٖ | فَاْتُوْا | قَالُوْا | اِبْرٰهِيْمُ (60) ط |
| ताकि वो | लोगों की | आंखों के सामने | उसे | पस लाओ | उन्होंने कहा | इब्राहीम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰلِهَتِنَا | هٰذَا | فَعَلْتَ | ءَاَنْتَ | قَالُوْٓا | يَشْهَدُوْنَ (61) |
| साथ हमारे इलाहों के | ये | किया तुमने | क्या तुम | उन्होंने कहा | वो गवाह हो जाएें |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَسْـَٔلُوْهُمْ | هٰذَا | كَبِيْرُهُمْ | فَعَلَهٗ ۖ | بَلْ | قَالَ | يٰٓاِبْرٰهِيْمُ (62) ط |
| पस पूछो उनसे | उसने | उनके बड़े | किया है उसे | बल्कि | उसने कहा | ऐ इब्राहीम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّكُمْ | فَقَالُوْٓا | اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ | فَرَجَعُوْٓا | يَنْطِقُوْنَ (63) | كَانُوْا | اِنْ |
| बेशक तुम | तो उन्होंने कहा | तरफ़ अपने दिलों के | तो वो पलटे | वो बोलते | हैं वो | अगर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَقَدْ | عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ج | نُكِسُوْا | ثُمَّ | الظّٰلِمُوْنَ (64) لا | اَنْتُمُ |
| अलबत्ता तहक़ीक़ | अपने सरों पर | वो औंधे कर दिए गए | फिर | ज़ालिम हो | तुम ही |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ دُوْنِ | اَفَتَعْبُدُوْنَ | قَالَ | يَنْطِقُوْنَ (65) | هٰٓؤُلَآءِ | مَا | عَلِمْتَ |
| सिवाए | क्या भला तुम इबादत करते हो | उसने कहा | बोलते | हैं ये | नहीं | जानता है तू |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَّكُمْ | اُفٍّ | يَضُرُّكُمْ (66) ط | وَّلَا | شَيْـًٔا | لَا يَنْفَعُكُمْ | مَا | اللّٰهِ |
| तुम पर | उफ़ है | वो नुक़्सान दे सकते हैं तुम्हें | और ना | कुछ भी | नहीं वो नफ़ा देते तुम्हें | उनकी जो | अल्लाह के |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالُوْا | تَعْقِلُوْنَ (67) | اَفَلَا | اللّٰهِ ط | مِنْ دُوْنِ | تَعْبُدُوْنَ | وَلِمَا |
| उन्होंने कहा | तुम अक़्ल से काम लेते | क्या भला नहीं | अल्लाह के | सिवाए | तुम इबादत करते हो | और जिनकी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قُلْنَا | فٰعِلِيْنَ (68) | كُنْتُمْ | اِنْ | اٰلِهَتَكُمْ | وَانْصُرُوْٓا | حَرِّقُوْهُ |
| कहा हमने | करने वाले | हो तुम | अगर | अपने इलाहों की | और मदद करो | जला डालो इसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهٖ | وَاَرَادُوْا | عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ (69) لا | وَّسَلٰمًا | بَرْدًا | كُوْنِيْ | يٰنَارُ |
| साथ उसके | और उन्होंने इरादा किया | इब्राहीम पर | और सलामती (वाली) | ठंडी | हो जा | ऐ आग |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِلَى الْاَرْضِ | وَلُوْطًا | وَنَجَّيْنٰهُ | الْاَخْسَرِيْنَ (70) ج | فَجَعَلْنٰهُمُ | كَيْدًا |
| तरफ़ उस ज़मीन के | और लूत को | और निजात दी हमने उसे | सबसे ज़्यादा ख़सारा पाने वाले | तो बना दिया हमने उन्हें | चाल चलने का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِسْحٰقَ ط | لَهٗٓ | وَوَهَبْنَا | لِلْعٰلَمِيْنَ (71) | فِيْهَا | بٰرَكْنَا | الَّتِيْ |
| इसहाक़ | उसे | और अता किया हमने | तमाम जहान वालों के लिए | उसमें | बरकत रखी हमने | वो जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَئِمَّةً | وَجَعَلْنٰهُمْ | صٰلِحِيْنَ (72) | جَعَلْنَا | وَكُلًّا | نَافِلَةً ط | وَيَعْقُوْبَ |
| इमाम | और बनाया हमने उन्हें | सालेह/नेक | बनाया हमने | और सबको | मज़ीद | और याक़ूब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْخَيْرٰتِ | فِعْلَ | اِلَيْهِمْ | وَاَوْحَيْنَآ | بِاَمْرِنَا | يَّهْدُوْنَ |
| भलाईयां | करने को | तरफ़ उनके | और वही की हमने | हमारे हुक्म से | वो रहनुमाई करते थे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عٰبِدِيْنَ (73) لا ج | لَنَا | وَكَانُوْا | الزَّكٰوةِ ج | وَاِيْتَآءَ | الصَّلٰوةِ | وَاِقَامَ |
| इबादत गुज़ार | हमारे लिए | और थे वो | ज़कात का | और अदा करना | नमाज़ का | और क़ायम करना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّتِيْ | مِنَ الْقَرْيَةِ | وَّنَجَّيْنٰهُ | وَّعِلْمًا | حُكْمًا | اٰتَيْنٰهُ | وَلُوْطًا |
| वो जो | उस बस्ती से | और निजात दी हमने उसे | और इल्म | हुक्म | अता किया हमने उसे | और लूत |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فٰسِقِيْنَ (74) لا | سَوْءٍ | قَوْمَ | كَانُوْا | اِنَّهُمْ | الْخَبٰٓئِثَ ط | تَّعْمَلُ | كَانَتْ |
| फ़ासिक़ | बुरे | लोग | थे वो | यक़ीनन वो | ख़बीस काम | वो करती | थी |

© AL-FURQAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 25 5 5

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَاَدْخَلْنٰهُ | فِيْ رَحْمَتِنَا ط | اِنَّهٗ | مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿75﴾ ع | وَنُوْحًا | اِذْ |
| और दाख़िल किया हमने उसे | अपनी रहमत में | यक़ीनन वो | नेक लोगों में से था | और नूह | जब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| نَادٰى | مِنْ قَبْلُ | فَاسْتَجَبْنَا | لَهٗ | فَنَجَّيْنٰهُ | وَاَهْلَهٗ |
| उसने पुकारा | इससे पहले | तो दुआ क़ुबूल कर ली हमने | उसकी | तो निजात दी हमने उसे | और उसके घर वालों को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْكَرْبِ | الْعَظِيْمِ ﴿76﴾ ج | وَنَصَرْنٰهُ | مِنَ الْقَوْمِ | الَّذِيْنَ | كَذَّبُوْا |
| करब/दुख से | बहुत बड़े | और मदद की हमने उसकी | उन लोगों के मुक़ाबले में | जिन्होंने | झुठलाया |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَا ط | اِنَّهُمْ | كَانُوْا | قَوْمَ | سَوْءٍ | فَاَغْرَقْنٰهُمْ | اَجْمَعِيْنَ ﴿77﴾ |
| हमारी आयात को | बेशक वो | थे वो | लोग | बुरे | तो ग़र्क़ कर दिया हमने उनको | सबके सब को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَدَاوٗدَ | وَسُلَيْمٰنَ | اِذْ | يَحْكُمٰنِ | فِي الْحَرْثِ | اِذْ | نَفَشَتْ |
| और दाऊद | और सुलैमान | जब | वो दोनों फ़ैसला कर रहे थे | खेत के मामले में | जब | रात को चर लिया था |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْهِ | غَنَمُ | الْقَوْمِ ج | وَكُنَّا | لِحُكْمِهِمْ | شٰهِدِيْنَ ﴿78﴾ ۙ | فَفَهَّمْنٰهَا |
| उसमें | बकरियों ने | क़ौम की | और थे हम | उनके फ़ैसले को | देखने वाले | पस समझा दिया हमने ये (फ़ैसला) |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سُلَيْمٰنَ ج | وَكُلًّا | اٰتَيْنَا | حُكْمًا | وَّعِلْمًا ز | وَّسَخَّرْنَا | مَعَ | دَاوٗدَ |
| सुलैमान को | और हर एक को | दिया हमने | हुक्म | और इल्म | और मुसख़्ख़र किए हमने | साथ | दाऊद के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْجِبَالَ | يُسَبِّحْنَ | وَالطَّيْرَ ط | وَكُنَّا | فٰعِلِيْنَ ﴿79﴾ | وَعَلَّمْنٰهُ |
| पहाड़ | वो तस्बीह करते थे | और परिंदे (भी) | और थे हम ही | करने वाले | और सिखाया हमने उसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| صَنْعَةَ | لَبُوْسٍ | لَّكُمْ | لِتُحْصِنَكُمْ | مِّنْ بَاْسِكُمْ ج | فَهَلْ | اَنْتُمْ |
| बनाना | लिबास का | तुम्हारे लिए | ताकि वो बचाए तुम्हें | तुम्हारी जंग से | तो क्या | तुम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| شٰكِرُوْنَ ﴿80﴾ | وَلِسُلَيْمٰنَ | الرِّيْحَ | عَاصِفَةً | تَجْرِيْ | بِاَمْرِهٖ |
| शुक्र गुज़ार हो | और सुलैमान के लिए | हवा (मुसख़्ख़र की) | तुंद-व तेज़-चलने वाली | वो चलती थी | उसके हुक्म से |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| إِلَى الْأَرْضِ | الَّتِي | بَارَكْنَا | فِيهَا | وَكُنَّا | بِكُلِّ شَيْءٍ | عَالِمِينَ ﴿81﴾ |
| तरफ़ उस ज़मीन के | वो जो | बरकत रखी हमने | जिसमें | और थे हम | हर चीज़ को | जानने वाले |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمِنَ الشَّيَاطِينِ | مَنْ | يَغُوصُونَ | لَهُ | وَيَعْمَلُونَ | عَمَلًا | دُونَ |
| और कुछ शयातीन | जो | ग़ोता लगाते थे | उसके लिए | और वो करते थे | कुछ काम | इलावा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذَٰلِكَ | وَكُنَّا | لَهُمْ | حَافِظِينَ ﴿82﴾ | وَأَيُّوبَ | إِذْ | نَادَىٰ |
| उसके | और थे हम ही | उनकी | निगरानी करने वाले | और अय्यूब | जब | पुकारा उसने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبَّهُ | أَنِّي | مَسَّنِيَ | الضُّرُّ | وَأَنْتَ | أَرْحَمُ | الرَّاحِمِينَ ﴿83﴾ |
| अपने रब को | कि बेशक मैं | पहुंची है मुझे | तकलीफ़ | और तू | सबसे ज़यादा रहम करने वाला है | सब रहम करने वालों से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاسْتَجَبْنَا | لَهُ | فَكَشَفْنَا | مَا | بِهِ | مِنْ ضُرٍّ | وَآتَيْنَاهُ | أَهْلَهُ |
| तो दुआ क़ुबूल कर ली हमने | उसकी | तो दूर कर दी हमने | जो कुछ | उसे | तकलीफ़ थी | और दिए हमने उसे | अहल ओ अयाल उसके |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَمِثْلَهُمْ | مَعَهُمْ | رَحْمَةً | مِنْ عِنْدِنَا | وَذِكْرَىٰ | لِلْعَابِدِينَ ﴿84﴾ |
| और उनकी मानिंद | साथ उनके | बतौर-ए-रहमत | अपने पास से | और नसीहत | इबादत करने वालों के लिए |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَإِسْمَاعِيلَ | وَإِدْرِيسَ | وَذَا الْكِفْلِ | كُلٌّ | مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿85﴾ |
| और इस्माईल | और इदरीस | और ज़ुलकिफ़्ल | सब | सब्र करने वालों में से थे |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَأَدْخَلْنَاهُمْ | فِي رَحْمَتِنَا | إِنَّهُمْ | مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿86﴾ | وَذَا النُّونِ |
| और दाख़िल किया हमने उन्हें | अपनी रहमत में | यक़ीनन वो | सालेह लोगों में से थे | और मछली वाला |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| إِذْ | ذَهَبَ | مُغَاضِبًا | فَظَنَّ | أَنْ | لَنْ | نَقْدِرَ | عَلَيْهِ |
| जब | वो चला गया | ग़ज़बनाक होकर | तो उसने समझ लिया | कि | हरगिज़ नहीं | हम क़ादिर होंगे | उस पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَنَادَىٰ | فِي الظُّلُمَاتِ | أَنْ | لَا | إِلَٰهَ | إِلَّا | أَنْتَ | سُبْحَانَكَ |
| तो उसने पुकारा | अंधेरों में | कि | नहीं | कोई इलाह (बरहक़) | मगर | तू ही | पाक है तू |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| اِنِّيْ | كُنْتُ | مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ (87) | فَاسْتَجَبْنَا | لَهٗ ۙ | وَنَجَّيْنٰهُ |
|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं | हूं मैं | ज़ालिमों में से | तो दुआ क़ुबूल कर ली हमने | उसकी | और निजात दी हमने उसे |

| مِنَ الْغَمِّ ۭ | وَكَذٰلِكَ | نُـْۨجِي | الْمُؤْمِنِيْنَ (88) | وَزَكَرِيَّآ | اِذْ |
|---|---|---|---|---|---|
| ग़म से | और इसी तरह | हम निजात दिया करते हैं | ईमान वालों को | और ज़करीया | जब |

| نَادٰى | رَبَّهٗ | رَبِّ | لَا تَذَرْنِيْ | فَرْدًا | وَّاَنْتَ | خَيْرُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसने पुकारा | अपने रब को | ऐ मेरे रब | ना तू छोड़ मुझे | अकेला | और तू ही | बेहतर है |

| الْوٰرِثِيْنَ ۚ (89) | فَاسْتَجَبْنَا | لَهٗ ۡ | وَوَهَبْنَا | لَهٗ | يَحْيٰى | وَاَصْلَحْنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सब वारिसों में | तो दुआ क़ुबूल कर ली हमने | उसकी | और अता किया हमने | उसे | यहया | और दुरुस्त कर दी हमने |

| لَهٗ | زَوْجَهٗ ۭ | اِنَّهُمْ | كَانُوْا | يُسٰرِعُوْنَ | فِي الْخَيْرٰتِ | وَيَدْعُوْنَنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसके लिए | बीवी उसकी | यक़ीनन वो | थे वो | वो जल्दी करते | नेकियों में | और वो पुकारते थे हमें |

| رَغَبًا | وَّرَهَبًا ۭ | وَكَانُوْا | لَنَا | خٰشِعِيْنَ (90) | وَالَّتِيْٓ | اَحْصَنَتْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रग़बत | और ख़ौफ़ से | और थे वो | हमारे ही लिए | ख़ुशू करने वाले | और उस औरत को | जिसने हिफ़ाज़त की |

| فَرْجَهَا | فَنَفَخْنَا | فِيْهَا | مِنْ رُّوْحِنَا | وَجَعَلْنٰهَا | وَابْنَهَآ |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी शर्मगाह की | तो फूक दिया हमने | उसमें | अपनी रूह से | और बनाया हमने उसे | और उसके बेटे को |

| اٰيَةً | لِّلْعٰلَمِيْنَ (91) | اِنَّ | هٰذِهٖٓ | اُمَّتُكُمْ | اُمَّةً | وَّاحِدَةً ۡ | وَّاَنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक निशानी | तमाम जहान वालों के लिए | यक़ीनन | ये | उम्मत है तुम्हारी | उम्मत | एक ही | और मैं |

| رَبُّكُمْ | فَاعْبُدُوْنِ (92) | وَتَقَطَّعُوْٓا | اَمْرَهُمْ | بَيْنَهُمْ ۭ | كُلٌّ |
|---|---|---|---|---|---|
| रब हूं तुम्हारा | पस इबादत करो मेरी | और उन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर डाला | अपने काम (दीन) को | आपस में | सबके सब |

| اِلَيْنَا | رٰجِعُوْنَ ۧ (93) | فَمَنْ | يَّعْمَلْ | مِنَ الصّٰلِحٰتِ | وَهُوَ | مُؤْمِنٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ हमारे | लौटने वाले हैं | तो जो कोई | अमल करेगा | नेकियों में से | जबकि वो | मोमिन हो |

ع 6 18 6

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَلَا | كُفْرَانَ | لِسَعْيِهٖ ۚ | وَاِنَّا | لَهٗ | كٰتِبُوْنَ ﴿94﴾ | وَحَرٰمٌ |
| तो नहीं | कोई नाक़द्री | उसकी कोशिशों की | और बेशक हम | उसके लिए | लिखने वाले हैं | और लाज़िम है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰى قَرْيَةٍ | اَهْلَكْنٰهَآ | اَنَّهُمْ | لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿95﴾ | حَتّٰٓى | اِذَا |
| बस्ती (वालों) पर | हलाक कर दिया हमने जिसे | कि बेशक वो | नहीं वो लौटेंगे | यहां तक कि | जब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فُتِحَتْ | يَاْجُوْجُ | وَمَاْجُوْجُ | وَهُمْ | مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ | يَّنْسِلُوْنَ ﴿96﴾ |
| खोले जाएंगे | याजूज | और माजूज | और वो | हर बुलंदी से | वो तेज़ चल पड़ेंगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاقْتَرَبَ | الْوَعْدُ | الْحَقُّ | فَاِذَا | هِيَ | شَاخِصَةٌ | اَبْصَارُ |
| और क़रीब आ जाएगा | वादा | सच्चा | तो अचानक | वो | खुली की खुली रह जाएंगी | आंखें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا ؕ | يٰوَيْلَنَا | قَدْ | كُنَّا | فِيْ غَفْلَةٍ | مِّنْ هٰذَا | بَلْ |
| उनकी जिन्होंने | कुफ़्र किया | हाय अफ़सोस हम पर | तहक़ीक़ | थे हम | ग़फ़लत में | इससे | बल्कि |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُنَّا | ظٰلِمِيْنَ ﴿97﴾ | اِنَّكُمْ | وَمَا | تَعْبُدُوْنَ | مِنْ دُوْنِ | اللّٰهِ |
| थे हम ही | ज़ालिम | बेशक तुम | और जिनकी | तुम इबादत करते हो | सिवाए | अल्लाह के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حَصَبُ | جَهَنَّمَ ؕ | اَنْتُمْ | لَهَا | وٰرِدُوْنَ ﴿98﴾ | لَوْ | كَانَ | هٰٓؤُلَآءِ |
| ईंधन होंगे | जहन्नम का | तुम | इसी पर | वारिद/दाख़िल होने वाले हो | अगर | होते | ये |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰلِهَةً | مَّا | وَرَدُوْهَا ؕ | وَكُلٌّ | فِيْهَا | خٰلِدُوْنَ ﴿99﴾ | لَهُمْ | فِيْهَا |
| इलाह | ना | वो वारिद होते उसमें | और सबके सब | उसमें | हमेशा रहने वाले हैं | उनके लिए | उसमें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| زَفِيْرٌ | وَّهُمْ | فِيْهَا | لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿100﴾ | اِنَّ | الَّذِيْنَ | سَبَقَتْ | لَهُمْ |
| चिल्लाना होगा | और वो | उसमें | ना वो सुनेंगे | बेशक | वो लोग | पहले तय हो गई | उनके लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِّنَّا | الْحُسْنٰٓى ۙ | اُولٰٓئِكَ | عَنْهَا | مُبْعَدُوْنَ ﴿101﴾ ۙ | لَا يَسْمَعُوْنَ |
| हमारी तरफ़ से | भलाई | यही लोग हैं | इससे | दूर रखे जाने वाले | नहीं वो सुनेंगे |

© AL-HADI INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| حَسِيْسَهَا ج | وَهُمْ | فِيْ مَا | اشْتَهَتْ | اَنْفُسُهُمْ | خٰلِدُوْنَ (102) ج |
|---|---|---|---|---|---|
| उसकी आहट को | और वो | उसमें जो | ख़्वाहिश करेंगे | नफ़्स उनके | हमेशा रहने वाले हैं |

| لَا يَحْزُنُهُمُ | الْفَزَعُ | الْاَكْبَرُ | وَتَتَلَقّٰىهُمُ | الْمَلٰٓئِكَةُ ط | هٰذَا |
|---|---|---|---|---|---|
| ना ग़मगीन करेगी उन्हें | घबराहट | बड़ी | और इस्तक़बाल करेंगे उनका | फ़रिश्ते | ये है |

| يَوْمُكُمُ | الَّذِيْ | كُنْتُمْ | تُوْعَدُوْنَ (103) | يَوْمَ | نَطْوِي | السَّمَآءَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन तुम्हारा | वो जो | थे तुम | तुम वादा दिए जाते | जिस दिन | हम लपेट देंगे | आसमान को |

| كَطَيِّ | السِّجِلِّ | لِلْكُتُبِ ط | كَمَا | بَدَاْنَآ | اَوَّلَ | خَلْقٍ | نُّعِيْدُهٗ ط |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मानिंद लपेटने | तूमार के (औराक़ को) | किताबों के लिए | जैसा कि | इब्तिदा की हमने | पहली | पैदाइश की | हम एआदा करेंगे उसका |

| وَعْدًا | عَلَيْنَا ط | اِنَّا | كُنَّا | فٰعِلِيْنَ (104) | وَلَقَدْ | كَتَبْنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वादा है | हमारे ज़िम्मे | बेशक हम | हैं हम | करने वाले | और अलबत्ता तहक़ीक़ | लिख दिया हमने |

| فِي الزَّبُوْرِ | مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ | اَنَّ | الْاَرْضَ | يَرِثُهَا | عِبَادِيَ |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़बूर में | बाद ज़िक्र के | कि बेशक | ज़मीन | वारिस होंगे उसके | मेरे बंदे |

| الصّٰلِحُوْنَ (105) | اِنَّ | فِيْ هٰذَا | لَبَلٰغًا | لِّقَوْمٍ | عٰبِدِيْنَ (106) ط | وَمَآ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो नेक हैं | बेशक | उसमें | अलबत्ता एक बड़ी ख़बर है | उस क़ौम के लिए | जो इबादत गुज़ार है | और नहीं |

| اَرْسَلْنٰكَ | اِلَّا | رَحْمَةً | لِّلْعٰلَمِيْنَ (107) | قُلْ | اِنَّمَا | يُوْحٰٓى | اِلَيَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भेजा हमने आपको | मगर | रहमत बनाकर | तमाम जहान वालों के लिए | कह दीजिए | कि बेशक | वही की जाती है | मेरी तरफ़ |

| اَنَّمَآ | اِلٰهُكُمْ | اِلٰهٌ | وَّاحِدٌ ج | فَهَلْ | اَنْتُمْ | مُّسْلِمُوْنَ (108) | فَاِنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | इलाह तुम्हारा | इलाह है | एक ही | तो क्या | तुम | फ़रमांबरदार हो | फिर अगर |

| تَوَلَّوْا | فَقُلْ | اٰذَنْتُكُمْ | عَلٰى سَوَآءٍ ط | وَاِنْ | اَدْرِيْٓ | اَقَرِيْبٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वो मुंह मोड़ लें | तो कह दीजिए | ख़बरदार कर दिया मैंने तुम्हें | यकसां तौर पर | और नहीं | मैं जानता | क्या क़रीब है |

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمْ | بَعِيْدٌ | مَّا | تُوْعَدُوْنَ (109) | اِنَّهٗ | يَعْلَمُ | الْجَهْرَ | مِنَ الْقَوْلِ |
| या | दूर है | जो | तुम वादा दिए जाते हो | बेशक वो | वो जानता है | ज़ाहिर को | बात में से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيَعْلَمُ | مَا | تَكْتُمُوْنَ (110) | وَاِنْ | اَدْرِيْ | لَعَلَّهٗ | فِتْنَةٌ | لَّكُمْ |
| और वो जानता है | उसको जो | तुम छुपाते हो | और नहीं | मैं जानता | शायद कि वो | फ़ितना हो | तुम्हारे लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَتَاعٌ | اِلٰى حِيْنٍ (111) | قٰلَ | رَبِّ | احْكُمْ | بِالْحَقِّ ط | وَرَبُّنَا |
| और फ़ायदा उठाना है | एक मुद्दत तक | कहा | ऐ मेरे रब | फ़ैसला कर दे | साथ हक़ के | और रब हमारा |

ع 19 7 7 النصف

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الرَّحْمٰنُ | الْمُسْتَعَانُ | عَلٰى | مَا | تَصِفُوْنَ (112) ع |
| रहमान है | जिस से मदद तलब की जाती है | उस पर | जो | तुम बयान करते हो |

## اٰيَاتُهَا : 78 — 22 سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ 103 — رُكُوْعَاتُهَا : 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰۤاَيُّهَا | النَّاسُ | اتَّقُوْا | رَبَّكُمْ ج | اِنَّ | زَلْزَلَةَ | السَّاعَةِ | شَيْءٌ |
| ऐ | लोगो | डरो | अपने रब से | बेशक | ज़लज़ला | क़यामत का | चीज़ है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَظِيْمٌ (1) | يَوْمَ | تَرَوْنَهَا | تَذْهَلُ | كُلُّ | مُرْضِعَةٍ | عَمَّاۤ |
| बहुत बड़ी | जिस दिन | तुम देखोगे उसे | ग़ाफ़िल हो जाएगी | हर | दूध पिलाने वाली | उससे जिसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَرْضَعَتْ | وَتَضَعُ | كُلُّ | ذَاتِ حَمْلٍ | حَمْلَهَا | وَتَرَى | النَّاسَ |
| उसने दूध पिलाया था | और गिरा देगी | हर | हमल वाली | हमल अपना | और आप देखेंगे | लोगों को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سُكٰرٰى | وَمَا | هُمْ | بِسُكٰرٰى | وَلٰكِنَّ | عَذَابَ | اللّٰهِ | شَدِيْدٌ (2) |
| नशे में | हालांकि नहीं (होंगे) | वो | नशे में | और लेकिन | अज़ाब | अल्लाह का | बहुत सख़्त है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمِنَ النَّاسِ | مَنْ | يُّجَادِلُ | فِى اللّٰهِ | بِغَيْرِ | عِلْمٍ | وَّيَتَّبِعُ |
| और लोगों में से कोई है | जो | झगड़ता है | अल्लाह (के बारे) में | बग़ैर | इल्म के | और वो पैरवी करता है |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَوَلَّاهُ | مَنْ | اَنَّهٗ | عَلَيْهِ | كُتِبَ | مَّرِيْدٍ ③ ۙ | شَيْطٰنٍ | كُلَّ |
| दोस्त बनाएगा उसे | जो कोई | कि बेशक वो | उस पर | लिख दिया गया | सरकश की | शैतान | हर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يٰۤاَيُّهَا | السَّعِيْرِ ④ | اِلٰى عَذَابِ | وَيَهْدِيْهِ | يُضِلُّهٗ | فَاَنَّهٗ |
| ऐ | दोज़ख़ के | तरफ़ अज़ाबे | वो रहनुमाई करेगा उसकी | वो भटका देगा उसे | तो बेशक वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خَلَقْنٰكُمْ | فَاِنَّا | مِّنَ الْبَعْثِ | فِیْ رَيْبٍ | كُنْتُمْ | اِنْ | النَّاسُ |
| पैदा किया हमने तुम्हें | तो बेशक हम | दोबारा जी उठने से | किसी शक में | हो तुम | अगर | लोगो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ مُّضْغَةٍ | ثُمَّ | مِنْ عَلَقَةٍ | ثُمَّ | مِنْ نُّطْفَةٍ | ثُمَّ | مِّنْ تُرَابٍ |
| गोश्त की बोटी से | फिर | जमे हुए ख़ून से | फिर | नुत्फ़ा से | फिर | मिट्टी से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَنُقِرُّ | لَكُمْ ؕ | لِّنُبَيِّنَ | مُخَلَّقَةٍ | وَّغَيْرِ | مُّخَلَّقَةٍ |
| और हम ठहराते हैं | तुम्हारे लिए | ताकि हम वाज़ेह करें | शक्ल वाली | और बग़ैर | शक्ल वाली |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| نُخْرِجُكُمْ | ثُمَّ | اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى | نَشَآءُ | مَا | فِی الْاَرْحَامِ |
| हम निकालते हैं तुम्हें | फिर | मुक़र्ररह मुद्दत तक | हम चाहते हैं | जिसको | रहमों में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُّتَوَفّٰى | مَّنْ | وَمِنْكُمْ | اَشُدَّكُمْ ۚ | لِتَبْلُغُوْۤا | ثُمَّ | طِفْلًا |
| फ़ौत किया जाता है | जो | और तुम में से कोई है | अपनी जवानी को | ताकि तुम पहुंचो | फिर | बच्चा बना कर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَعْلَمَ | لِكَيْلَا | الْعُمُرِ | اَرْذَلِ | اِلٰۤى | يُّرَدُّ | مَّنْ | وَمِنْكُمْ |
| वो जाने | ताकि ना | उम्र के | नाकारा | तरफ़ | लौटाया जाता है | जो | और तुम में से कोई है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْزَلْنَا | فَاِذَاۤ | هَامِدَةً | الْاَرْضَ | وَتَرَى | شَيْـًٔا ؕ | عِلْمٍ | مِنْۢ بَعْدِ |
| उतारते हैं हम | तो जब | ख़ुश्क | ज़मीन को | और आप देखते हैं | कुछ भी | जानने के | बाद |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ | وَاَنْۢبَتَتْ | وَرَبَتْ | اهْتَزَّتْ | الْمَآءَ | عَلَيْهَا |
| हर क़िस्म के | और वो उगाती है | और वो उभर आती है | वो तरो ताज़ा हो जाती है | पानी | उस पर |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُحْيِ | وَ اَنَّهٗ | الْحَقُّ | هُوَ | اللّٰهَ | بِاَنَّ | ذٰلِكَ | بَهِيْجٍ ⑤ |
| वो ज़िंदा करता है | और बेशक वो | हक़ है | वो ही | अल्लाह | बवजह इसके कि | ये | रौनक़ वाले (पोदे) |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّاعَةَ | وَّ اَنَّ | قَدِيْرٌ ⑥ لا | شَيْءٍ | كُلِّ | عَلٰى | وَ اَنَّهٗ | الْمَوْتٰى |
| क़यामत | और बेशक | ख़ूब क़ुदरत वाला है | चीज़ के | हर | ऊपर | और बेशक वो | मुर्दों को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي الْقُبُوْرِ ⑦ | مَنْ | يَبْعَثُ | اللّٰهَ | وَ اَنَّ | فِيْهَا لا | لَّا رَيْبَ | اٰتِيَةٌ |
| क़ब्रों में हैं | उन्हें जो | दोबारा उठाएगा | अल्लाह | और बेशक | इसमें | नहीं कोई शक | आने वाली है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّلَا | عِلْمٍ | بِغَيْرِ | فِي اللّٰهِ | يُّجَادِلُ | مَنْ | وَمِنَ النَّاسِ |
| और बग़ैर | इल्म के | बग़ैर | अल्लाह के बारे में | झगड़ता है | जो | और लोगों में से कोई है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِيُضِلَّ | عِطْفِهٖ | ثَانِيَ | مُّنِيْرٍ ⑧ لا | كِتٰبٍ | وَّلَا | هُدًى |
| ताकि वो भटका दे | शाना अपना | मोड़ने वाला है | रोशन के | किताबे | और बग़ैर | हिदायत के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَوْمَ | وَّنُذِيْقُهٗ | خِزْيٌ | فِي الدُّنْيَا | لَهٗ | عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط |
| दिन | और हम चखाऐंगे उसे | रुस्वाई | दुनिया में | उसके लिए है | अल्लाह के रास्ते से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَدٰكَ | قَدَّمَتْ | بِمَا | ذٰلِكَ | الْحَرِيْقِ ⑨ | عَذَابَ | الْقِيٰمَةِ |
| तेरे दोनों हाथों ने | आगे भेजा | बवजह इसके जो | ये | आग का | अज़ाब | क़यामत के |

ع 1 10 8

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَنْ | وَمِنَ النَّاسِ | لِّلْعَبِيْدِ ⑩ ع | بِظَلَّامٍ | لَيْسَ | اللّٰهَ | وَ اَنَّ |
| जो | और लोगों में से कोई है | बंदों पर | ज़ुल्म करने वाला | नहीं है | अल्लाह | और बेशक |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهٖ ج | اطْمَاَنَّ | خَيْرُ | اَصَابَهٗ | فَاِنْ | عَلٰى حَرْفٍ ج | اللّٰهَ | يَّعْبُدُ |
| उस पर | वो मुत्मइन हो जाता है | भलाई | पहुंचे उसे | फिर अगर | किनारे पर | अल्लाह की | इबादत करता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الدُّنْيَا | خَسِرَ | عَلٰى وَجْهِهٖ قف ج | انْقَلَبَ | فِتْنَةُ | اَصَابَتْهُ | وَاِنْ |
| दुनिया | उसने नुक़्सान उठाया | अपने चेहरे पर | वो पलट जाता है | आज़माइश | पहुंचे उसे | और अगर |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاٰخِرَةَ ؕ | ذٰلِكَ | هُوَ | الْخُسْرَانُ | الْمُبِيْنُ ⑪ | يَدْعُوْا | مِنْ دُوْنِ |
| और आख़िरत का | ये है | वो | ख़सारा/नुक़्सान | खुला | वो पुकारता है | सिवाए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | مَا | لَا يَضُرُّهٗ | وَمَا | لَا يَنْفَعُهٗ ؕ | ذٰلِكَ | هُوَ | الضَّلٰلُ |
| अल्लाह के | उसे जो | नहीं नुक़्सान देता उसे | और जो | नहीं फ़ायदा देता उसे | यही है | वो | गुमराही |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْبَعِيْدُ ⑫ ۚ | يَدْعُوْا | لَمَنْ | ضَرُّهٗٓ | اَقْرَبُ | مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ | لَبِئْسَ |
| दूर की | वो पुकारता है | यक़ीनन उसे | नुक़्सान जिसका | क़रीबतर है | उसके नफ़ा से | अलबत्ता कितना बुरा है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمَوْلٰى | وَلَبِئْسَ | الْعَشِيْرُ ⑬ | اِنَّ | اللّٰهَ | يُدْخِلُ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا |
| दोस्त | और अलबत्ता कितना बुरा है | साथी | बेशक | अल्लाह | वो दाख़िल करेगा | उन्हें जो | ईमान लाए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ | جَنّٰتٍ | تَجْرِىْ | مِنْ تَحْتِهَا | الْاَنْهٰرُ ؕ | اِنَّ |
| और उन्होंने अमल किए | नेक | बाग़ात में | बहती हैं | उनके नीचे से | नहरें | बेशक |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | يَفْعَلُ | مَا | يُرِيْدُ ⑭ | مَنْ | كَانَ | يَظُنُّ | اَنْ | لَّنْ |
| अल्लाह | करता है | जो | वो चाहता है | जो कोई | है | समझता | ये कि | हरगिज़ नहीं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَّنْصُرَهُ | اللّٰهُ | فِى الدُّنْيَا | وَالْاٰخِرَةِ | فَلْيَمْدُدْ | بِسَبَبٍ |
| मदद करेगा उसकी | अल्लाह | दुनिया में | और आख़िरत में | पस चाहिए कि वो दराज़ कर ले | एक रस्सी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَى السَّمَآءِ | ثُمَّ لْيَقْطَعْ | فَلْيَنْظُرْ | هَلْ | يُذْهِبَنَّ | كَيْدُهٗ | مَا |
| तरफ़ आसमान के | फिर चाहिए कि वो काट डाले | फिर चाहिए कि वो देखे | क्या | वाक़ई लेजा ती है | तदबीर उसकी | उस (चीज़) को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَغِيْظُ ⑮ | وَكَذٰلِكَ | اَنْزَلْنٰهُ | اٰيٰتٍۢ | بَيِّنٰتٍ ۙ | وَّاَنَّ | اللّٰهَ |
| जो ग़ुस्सा दिलाती है | और इसी तरह | नाज़िल किया हमने उसे | आयात | वाज़ेह (की शक्ल में) | और बेशक | अल्लाह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَهْدِىْ | مَنْ | يُّرِيْدُ ⑯ | اِنَّ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَالَّذِيْنَ | هَادُوْا |
| वो हिदायत देता है | जिसे | वो चाहता है | बेशक | वो जो | ईमान लाए | और वो जो | यहूदी बन गए |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | اِنَّ | اَشْرَكُوْٓا ۖۙ | وَالَّذِيْنَ | وَالْمَجُوْسَ | وَالنَّصٰرٰى | وَالصّٰبِـِٕيْنَ |
| अल्लाह | बेशक | शिर्क किया | और वो जिन्होंने | और मजूसी | और नसारा | और साबी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كُلِّ | عَلٰى | اللّٰهَ | اِنَّ | الْقِيٰمَةِ ۭ | يَوْمَ | بَيْنَهُمْ | يَفْصِلُ |
| हर | ऊपर | अल्लाह | बेशक | क़यामत के | दिन | दर्मियान उनके | फ़ैसला करेगा |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَنْ | لَهٗ | يَسْجُدُ | اللّٰهَ | اَنَّ | تَرَ | اَلَمْ | شَهِيْدٌ (17) | شَيْءٍ |
| जो | उसी को | सज्दा करता है | अल्लाह | कि बेशक | आपने देखा | क्या नहीं | ख़ूब गवाह है | चीज़ के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَالنُّجُوْمُ | وَالْقَمَرُ | وَالشَّمْسُ | فِي الْاَرْضِ | وَمَنْ | فِي السَّمٰوٰتِ |
| और सितारे | और चांद | और सूरज | ज़मीन में है | और जो | आसमानों में है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَكَثِيْرٌ | مِّنَ النَّاسِ ۭ | وَكَثِيْرٌ | وَالدَّوَاۗبُّ | وَالشَّجَرُ | وَالْجِبَالُ |
| और बहुत से | लोगों में से | और बहुत से | और चौपाए | और दरख़्त | और पहाड़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهٗ | فَمَا | اللّٰهُ | يُّهِنِ | وَمَنْ | الْعَذَابُ ۭ | عَلَيْهِ | حَقَّ |
| उसके लिए | तो नहीं | अल्लाह | रुस्वा कर दे | और जिसे | अज़ाब | उन पर | साबित हो चुका |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| خَصْمٰنِ | هٰذٰنِ | يَشَاۗءُ (18) ۩ السجدة | مَا | يَفْعَلُ | اللّٰهَ | اِنَّ | مِنْ مُّكْرِمٍ ۭ |
| झगड़ने वाले हैं | ये दो | वो चाहता है | जो | वो करता है | अल्लाह | बेशक | कोई इज़्ज़त देने वाला |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ثِيَابٌ | لَهُمْ | قُطِّعَتْ | كَفَرُوْا | فَالَّذِيْنَ | فِيْ رَبِّهِمْ ۡ | اخْتَصَمُوْا |
| कपड़े | उनके लिए | काटे जा चुके हैं | कुफ़्र किया | तो वो जिन्होंने | अपने रब के बारे में | जिन्होंने झगड़ा किया |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يُصْهَرُ | الْحَمِيْمُ (19) ج | رُءُوْسِهِمُ | مِنْ فَوْقِ | يُصَبُّ | مِّنْ نَّارٍ ۭ |
| पिघला दिया जाएगा | खौलता पानी | उनके सरों के | ऊपर से | डाला जाएगा | आग से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مَّقَامِعُ | وَلَهُمْ | وَالْجُلُوْدُ (20) ۭ | فِيْ بُطُوْنِهِمْ | مَا | بِهٖ |
| गुर्ज़/हथोड़े होंगे | और उनके लिए | और खालें भी | उनके पेटों में है | जो कुछ | साथ उसके |

السجدة 6

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| مِنْ حَدِيْدٍ ﴿21﴾ | كُلَّمَآ | اَرَادُوْٓا | اَنْ | يَّخْرُجُوْا | مِنْهَا | مِنْ غَمٍّ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोहे के | जब भी | वो चाहेंगे | कि | वो निकल जाएं | उससे | ग़म से |

ع 2 12 9

| اُعِيْدُوْا | فِيْهَا ق | وَذُوْقُوْا | عَذَابَ | الْحَرِيْقِ ﴿22﴾ ع | اِنَّ | اللّٰهَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वो लौटा दिए जाएंगे | उसी में | और चखो | अज़ाब | आग का | बेशक | अल्लाह |

| يُدْخِلُ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ | جَنّٰتٍ | تَجْرِيْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दाख़िल करेगा | उन्हें जो | ईमान लाए | और उन्होंने अमल किए | नेक | बाग़ात में | बहती हैं |

| مِنْ تَحْتِهَا | الْاَنْهٰرُ | يُحَلَّوْنَ | فِيْهَا | مِنْ اَسَاوِرَ | مِنْ ذَهَبٍ |
|---|---|---|---|---|---|
| उनके नीचे से | नहरें | वो आरास्ता किए जाएंगे | उनमें | कंगनों से | सोने के |

| وَّلُؤْلُؤًا ط | وَلِبَاسُهُمْ | فِيْهَا | حَرِيْرٌ ﴿23﴾ | وَهُدُوْٓا | اِلَى الطَّيِّبِ |
|---|---|---|---|---|---|
| और मोती के | और लिबास होगा उनका | उसमें | रेशम | और वो राह दिखाए गए | तरफ़ पाकीज़ा |

| مِنَ الْقَوْلِ صلے | وَهُدُوْٓا | اِلٰى صِرَاطِ | الْحَمِيْدِ ﴿24﴾ | اِنَّ | الَّذِيْنَ |
|---|---|---|---|---|---|
| बात के | और वो राह दिखाए गए | तरफ़ रास्ते | ख़ूब तारीफ़ वाले (रब) के | बेशक | वो जिन्होंने |

| كَفَرُوْا | وَيَصُدُّوْنَ | عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ | وَالْمَسْجِدِ | الْحَرَامِ | الَّذِيْ |
|---|---|---|---|---|---|
| कुफ़्र किया | और वो रोकते हैं | अल्लाह के रास्ते से | और मस्जिदे | हराम से | वो जो |

| جَعَلْنٰهُ | لِلنَّاسِ | سَوَآءَ ۨ | الْعَاكِفُ | فِيْهِ | وَالْبَادِ ط | وَمَنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बनाया हमने उसे | लोगों के लिए | यकसां/बराबर है | रहने वाला | उसमें | और बाहर से आने वाला | और जो कोई |

ع 3 3 10

| يُّرِدْ | فِيْهِ | بِاِلْحَادٍ | بِظُلْمٍ | نُّذِقْهُ | مِنْ عَذَابٍ | اَلِيْمٍ ﴿25﴾ ع |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इरादा करेगा | उसमें | इलहाद/कजरवी का | साथ ज़ुल्म के | हम चखाएंगे उसे | अज़ाब में से | दर्दनाक |

| وَاِذْ | بَوَّاْنَا | لِاِبْرٰهِيْمَ | مَكَانَ | الْبَيْتِ | اَنْ | لَّا تُشْرِكْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | मुक़र्रर कर दी हमने | इब्राहीम के लिए | जगह | बैतुल्लाह की | कि | ना तुम शरीक करो |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بِيْ | شَيْـًٔا | وَّطَهِّرْ | بَيْتِيَ | لِلطَّآئِفِيْنَ | وَالْقَآئِمِيْنَ |
| मेरे साथ | किसी चीज़ को | और पाक रखो | मेरे घर को | वास्ते तवाफ़ करने वालों के | और क़याम करने वालों |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَالرُّكَّعِ | السُّجُوْدِ ﴿26﴾ | وَاَذِّنْ | فِي النَّاسِ | بِالْحَجِّ | يَاْتُوْكَ |
| और रुकूअ करने वालों | और सज्दा करने वालों के | और ऐलान करदो | लोगों में | हज का | वो आएंगे तेरे पास |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رِجَالًا | وَّعَلٰى | كُلِّ | ضَامِرٍ | يَّاْتِيْنَ | مِنْ كُلِّ فَجٍّ | عَمِيْقٍ ﴿27﴾ لا |
| पैदल | और ऊपर | हर | लाग़र ऊंट के | वो आएंगे | हर कुशादा रास्ते से | दूर दराज़ के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لِّيَشْهَدُوْا | مَنَافِعَ | لَهُمْ | وَيَذْكُرُوا | اسْمَ | اللّٰهِ |
| ताकि वो देखें | फ़ायदों को | अपने लिए | और ज़िक्र करें | नाम | अल्लाह का |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ | عَلٰى | مَا | رَزَقَهُمْ | مِّنْۢ بَهِيْمَةِ | الْاَنْعَامِ ج |
| मालूम दिनों में | उस पर | जो | उसने रिज़्क़ दिया उन्हें | चौपायों में से | मवेशियों के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَكُلُوْا | مِنْهَا | وَاَطْعِمُوا | الْبَآئِسَ | الْفَقِيْرَ ﴿28﴾ | ثُمَّ لْيَقْضُوْا |
| पस खाओ | उसमें से | और खिलाओ | भूखे | मोहताज को | फिर चाहिए कि वो दूर करें |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَفَثَهُمْ | وَلْيُوْفُوْا | نُذُوْرَهُمْ | وَلْيَطَّوَّفُوْا | بِالْبَيْتِ | الْعَتِيْقِ ﴿29﴾ |
| मैल अपना | और चाहिए कि<br>वो पूरी करें | नज़्रें अपनी | और चाहिए कि<br>वो तवाफ़ करें | उस घर का | जो क़दीम है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذٰلِكَ ق | وَمَنْ | يُّعَظِّمْ | حُرُمٰتِ اللّٰهِ | فَهُوَ | خَيْرٌ | لَّهٗ |
| ये है (हुक्म) | और जो कोई | ताज़ीम करेगा | अल्लाह की हुरमतों की | तो वो | बेहतर है | उसके लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عِنْدَ | رَبِّهٖ ط | وَاُحِلَّتْ | لَكُمُ | الْاَنْعَامُ | اِلَّا | مَا | يُتْلٰى |
| नज़दीक | उसके रब के | और हलाल किए गए | तुम्हारे लिए | चौपाए | सिवाय | उनके जो | पढ़े जाते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْكُمْ | فَاجْتَنِبُوا | الرِّجْسَ | مِنَ الْاَوْثَانِ | وَاجْتَنِبُوْا | قَوْلَ | الزُّوْرِ ﴿30﴾ لا |
| तुम पर | पस बचो | गंदगी से | बुतों की | और बचो | बात | झूठी से |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حُنَفَآءَ | لِلّٰهِ | غَيْرَ | مُشْرِكِيْنَ | بِهٖ ط | وَمَنْ | يُّشْرِكْ | بِاللّٰهِ |
| यकसू होकर | अल्लाह के लिए | ना | शरीक करने वाले | साथ उसके | और जो | शिर्क करेगा | साथ अल्लाह के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَكَاَنَّمَا | خَرَّ | مِنَ السَّمَآءِ | فَتَخْطَفُهُ | الطَّيْرُ | اَوْ | تَهْوِيْ | بِهِ |
| तो गोया कि | वो गिर पड़ा | आसमान से | फिर उचक लेते हैं उसे | परिंदे | या | गिरा देती है | उसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الرِّيْحُ | فِيْ مَكَانٍ | سَحِيْقٍ (31) | ذٰلِكَ ق | وَمَنْ | يُّعَظِّمْ | شَعَآئِرَ اللّٰهِ |
| हवा | किसी जगह में | दूर दराज़ की | ये है (हुक्म) | और जो | ताज़ीम करेगा | अल्लाह की निशानियों की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِنَّهَا | مِنْ تَقْوَى | الْقُلُوْبِ (32) | لَكُمْ | فِيْهَا | مَنَافِعُ | اِلٰٓى اَجَلٍ |
| तो बेशक वो | तक़वा में से है | दिलों के | तुम्हारे लिए | इसमें | कुछ फ़ायदे हैं | एक वक़्त तक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّسَمًّى | ثُمَّ | مَحِلُّهَآ | اِلَى الْبَيْتِ | الْعَتِيْقِ (33) ع | وَلِكُلِّ | اُمَّةٍ |
| जो मुक़र्रर है | फिर | हलाल होने की जगह उनकी | तरफ़ उस घर के है | जो क़दीम है | और वास्ते हर | उम्मत के |

ع 4 8 11

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| جَعَلْنَا | مَنْسَكًا | لِّيَذْكُرُوا | اسْمَ | اللّٰهِ | عَلٰى | مَا | رَزَقَهُمْ |
| मुक़र्रर किया हमने | क़ुर्बानी करना | ताकि वो ज़िक्र करें | नाम | अल्लाह का | उस पर | जो | उसने रिज़्क़ दिया उन्हें |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْۢ بَهِيْمَةِ | الْاَنْعَامِ ط | فَاِلٰهُكُمْ | اِلٰهٌ | وَّاحِدٌ | فَلَهٗٓ |
| चौपायों में से | मवेशियों के | तो इलाह तुम्हारा | इलाह है | एक ही | तो उसी के लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَسْلِمُوْا ط | وَبَشِّرِ | الْمُخْبِتِيْنَ (34) لا | الَّذِيْنَ | اِذَا | ذُكِرَ | اللّٰهُ |
| फ़रमांबरदार हो जाओ | और ख़ुशख़बरी दे दीजिए | आजिज़ी करने वालों को | वो लोग | जब | ज़िक्र किया जाता है | अल्लाह का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَجِلَتْ | قُلُوْبُهُمْ | وَالصّٰبِرِيْنَ | عَلٰى | مَآ | اَصَابَهُمْ | وَالْمُقِيْمِي |
| डर जाते हैं | दिल उनके | और जो सब्र करने वाले हैं | उस पर | जो | मुसीबत पहुंचे उन्हें | और क़ायम करने वाले हैं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الصَّلٰوةِ لا | وَمِمَّا | رَزَقْنٰهُمْ | يُنْفِقُوْنَ (35) | وَالْبُدْنَ | جَعَلْنٰهَا |
| नमाज़ | और उसमें से जो | रिज़्क़ दिया हमने उन्हें | वो ख़र्च करते हैं | और क़ुर्बानी के ऊंट | बनाया हमने उन्हें |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَكُمْ | مِّنْ شَعَآئِرِ | اللّٰهِ | لَكُمْ | فِيْهَا | خَيْرٌ ۖ ق | فَاذْكُرُوا | اسْمَ |
| तुम्हारे लिए | निशानियों में से | अल्लाह की | तुम्हारे लिए | उनमें | भलाई है | पस ज़िक्र करो | नाम |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | عَلَيْهَا | صَوَآفَّ ج | فَاِذَا | وَجَبَتْ | جُنُوْبُهَا | فَكُلُوْا | مِنْهَا |
| अल्लाह का | उन पर | सफ़ बस्ता खड़ा करके | फिर जब | गिर पड़ें | पहलू उनके | पस खाओ | उनमें से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَاَطْعِمُوا | الْقَانِعَ | وَالْمُعْتَرَّ ط | كَذٰلِكَ | سَخَّرْنٰهَا | لَكُمْ |
| और खिलाओ | क़नाअत करने वाले | और सवाल करने वाले को | इसी तरह | मुसख़्ख़र किया हमने उन्हें | तुम्हारे लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَعَلَّكُمْ | تَشْكُرُوْنَ (36) | لَنْ | يَّنَالَ | اللّٰهَ | لُحُوْمُهَا | وَلَا | دِمَآؤُهَا |
| ताकि तुम | तुम शुक्र करो | हरगिज़ नहीं | पहुंचते | अल्लाह को | गोश्त उनके | और ना | ख़ून उनके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلٰكِنْ | يَّنَالُهُ | التَّقْوٰى | مِنْكُمْ ط | كَذٰلِكَ | سَخَّرَهَا | لَكُمْ |
| और लेकिन | पहुंचता है उसे | तक़्वा | तुम्हारा | इसी तरह | उसने मुसख़्ख़र किया उन्हें | तुम्हारे लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِتُكَبِّرُوا | اللّٰهَ | عَلٰى | مَا | هَدٰىكُمْ ط | وَبَشِّرِ | الْمُحْسِنِيْنَ (37) |
| ताकि तुम बड़ाई बयान करो | अल्लाह की | उस पर | जो | उसने हिदायत दी तुम्हें | और ख़ुशख़बरी दे दीजिए | नेकी करने वालों को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّ | اللّٰهَ | يُدٰفِعُ | عَنِ الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا ط | اِنَّ | اللّٰهَ | لَا يُحِبُّ |
| बेशक | अल्लाह | दफ़ा करता है | उन लोगों की तरफ़ से जो | ईमान लाए | बेशक | अल्लाह | नहीं वो पसंद करता |

ع 5 / 5 / 12 الثلثة

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كُلَّ | خَوَّانٍ | كَفُوْرٍ (38) ع | اُذِنَ | لِلَّذِيْنَ | يُقٰتَلُوْنَ |
| हर | बहुत ख़यानत करने वाले | बहुत नाशुक्रे को | इजाज़त दे दी गई (जंग की) | उनको जो | जंग किए जाते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاَنَّهُمْ | ظُلِمُوْا ط | وَاِنَّ | اللّٰهَ | عَلٰى نَصْرِهِمْ | لَقَدِيْرُ (39) لا | الَّذِيْنَ |
| क्योंकि वो | ज़ुल्म किए गए हैं | और बेशक | अल्लाह | उनकी मदद पर | अलबत्ता ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | वो जो |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اُخْرِجُوْا | مِنْ دِيَارِهِمْ | بِغَيْرِ | حَقٍّ | اِلَّآ | اَنْ | يَّقُوْلُوْا | رَبُّنَا | اللّٰهُ ط |
| निकाले गए | अपने घरों से | बग़ैर | हक़ के | मगर | ये कि | वो कहते हैं | रब हमारा | अल्लाह है |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَوْلَا | دَفْعُ | اللّٰهِ | النَّاسَ | بَعْضَهُمْ | بِبَعْضٍ | لَّهُدِّمَتْ |
| और अगर ना होता | दूर करना | अल्लाह का | लोगों को | उनके बाज़ को | साथ बाज़ के | अलबत्ता मुनहदिम कर दी जातीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| صَوَامِعُ | وَبِيَعٌ | وَّصَلَوٰتٌ | وَّمَسٰجِدُ | يُذْكَرُ | فِيْهَا | اسْمُ |
| ख़ानक़ाहें | और गिरजे | और इबादत ख़ाने | और मस्जिदें | ज़िक्र किया जाता है | जिनमें | नाम |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | كَثِيْرًا ؕ | وَلَيَنْصُرَنَّ | اللّٰهُ | مَنْ | يَّنْصُرُهٗ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ |
| अल्लाह का | बकसरत | और अलबत्ता ज़रूर मदद करेगा | अल्लाह | उसकी जो | मदद करता है उसकी | बेशक | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَقَوِيٌّ | عَزِيْزٌ (40) | اَلَّذِيْنَ | اِنْ | مَّكَّنّٰهُمْ | فِي الْاَرْضِ | اَقَامُوا |
| अलबत्ता बहुत क़ुव्वत वाला है | बहुत ज़बरदस्त है | वो लोग जो | अगर | इक़्तिदार दें हम उन्हें | ज़मीन में | वो क़ायम करें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الصَّلٰوةَ | وَاٰتَوُا | الزَّكٰوةَ | وَاَمَرُوْا | بِالْمَعْرُوْفِ | وَنَهَوْا | عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ |
| नमाज़ | और अदा करें | ज़कात | और वो हुक्म दें | नेकी का | और वो रोकें | बुराई से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلِلّٰهِ | عَاقِبَةُ | الْاُمُوْرِ (41) | وَاِنْ | يُّكَذِّبُوْكَ | فَقَدْ | كَذَّبَتْ |
| और अल्लाह ही के लिए है | अंजाम | सब कामों का | और अगर | वो झुठलाएं आपको | तो तहक़ीक़ | झुठलाया |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَبْلَهُمْ | قَوْمُ | نُوْحٍ | وَّعَادٌ | وَّثَمُوْدُ (42) ۙ | وَقَوْمُ | اِبْرٰهِيْمَ | وَقَوْمُ |
| उनसे पहले | क़ौमे | नूह ने | और आद | और समूद ने | और क़ौमे | इब्राहीम | और क़ौमे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لُوْطٍ (43) ۙ | وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ | وَكُذِّبَ | مُوْسٰى | فَاَمْلَيْتُ | لِلْكٰفِرِيْنَ |
| लूत | और मदयन के रहने वालों ने | और झुठलाए गए | मूसा | तो ढील दी मैंने | काफ़िरों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ثُمَّ | اَخَذْتُهُمْ ۚ | فَكَيْفَ | كَانَ | نَكِيْرِ (44) | فَكَاَيِّنْ | مِّنْ قَرْيَةٍ |
| फिर | पकड़ लिया मैंने उन्हें | तो कैसा | था | अज़ाब मेरा | तो कितनी ही | बस्तियां |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَهْلَكْنٰهَا | وَهِيَ | ظَالِمَةٌ | فَهِيَ | خَاوِيَةٌ | عَلٰى | عُرُوْشِهَا | وَبِئْرٍ |
| हलाक किया हमने उन्हें | जब कि वो | ज़ालिम थीं | तो वो | गिरी पड़ी हैं | ऊपर | अपनी छतों के | और कुऐं |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَتَكُوْنَ | فِي الْاَرْضِ | يَسِيْرُوْا | اَفَلَمْ | مَّشِيْدٍ ﴿45﴾ | وَّقَصْرٍ | مُّعَطَّلَةٍ |
| तो होते | ज़मीन में | वो चले फिरे | क्या भला नहीं | पुख़्ता | और महल | बेकार |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهَا ۚ | يَّسْمَعُوْنَ | اٰذَانٌ | اَوْ | بِهَآ | يَّعْقِلُوْنَ | قُلُوْبٌ | لَهُمْ |
| साथ उनके | वो सुनते | कान | या | साथ उनके | वो अक़्ल से काम लेते | दिल | उनके लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْقُلُوْبُ | تَعْمَى | وَلٰكِنْ | الْاَبْصَارُ | لَا تَعْمَى | فَاِنَّهَا |
| दिल | अंधे हो जाते हैं | और लेकिन | आंखें | नहीं अंधी होतीं | तो बेशक बात ये है कि |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يُّخْلِفَ | وَلَنْ | بِالْعَذَابِ | وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ | فِي الصُّدُوْرِ ﴿46﴾ | الَّتِيْ |
| ख़िलाफ़ करेगा | और हरगिज़ ना | अज़ाब को | और वो जल्दी मांगते हैं आपसे | सीनों में हैं | वो जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سَنَةٍ | كَاَلْفِ | رَبِّكَ | عِنْدَ | يَوْمًا | وَاِنَّ | وَعْدَهٗ ۗ | اللّٰهُ |
| साल के है | मानिंद एक हज़ार | आपके रब के | नज़दीक | एक दिन | और बेशक | अपने वादे के | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَهِيَ | لَهَا | اَمْلَيْتُ | مِّنْ قَرْيَةٍ | وَكَاَيِّنْ | تَعُدُّوْنَ ﴿47﴾ | مِّمَّا |
| जब कि वो | उन्हें | ढील दी मैंने | बस्तियां | और कितनी ही | तुम गिनते हो | उससे जो |

ع 6 10 13

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰۤاَيُّهَا | قُلْ | الْمَصِيْرُ ﴿48﴾ ع | وَاِلَيَّ | اَخَذْتُهَا ۚ | ثُمَّ | ظَالِمَةٌ |
| ऐ | कह दीजिए | लौटना है | और मेरी ही तरफ़ | पकड़ लिया मैंने उन्हें | फिर | ज़ालिम थीं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰمَنُوْا | فَالَّذِيْنَ | مُّبِيْنٌ ﴿49﴾ ج | نَذِيْرٌ | لَكُمْ | اَنَا | اِنَّمَآ | النَّاسُ |
| ईमान लाए | तो वो जो | खुल्लम-खुल्ला | डराने वाला हूं | तुम्हारे लिए | मैं | बेशक | लोगो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالَّذِيْنَ | كَرِيْمٌ ﴿50﴾ | وَّرِزْقٌ | مَّغْفِرَةٌ | لَهُمْ | الصّٰلِحٰتِ | وَعَمِلُوا |
| और वो जिन्होंने | इज़्ज़त वाला | और रिज़्क़ है | बख़्शिश | उनके लिए | नेक | और उन्होंने अमल किए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَآ | الْجَحِيْمِ ﴿51﴾ | اَصْحٰبُ | اُولٰٓئِكَ | مُعٰجِزِيْنَ | فِيْۤ اٰيٰتِنَا | سَعَوْا |
| और नहीं | जहन्नम के | साथी | यही लोग हैं | आजिज़ करने वाले बन कर | हमारी आयात में | कोशिश की |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَمَنّٰٓى | اِذَا | اِلَّآ | نَّبِيٍّ | وَّلَا | مِنْ رَّسُوْلٍ | مِنْ قَبْلِكَ | اَرْسَلْنَا |
| उसने पढ़ा | जब | मगर | कोई नबी | और ना | कोई रसूल | आपसे पहले | भेजा हमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُلْقِى | مَا | اللّٰهُ | فَيَنْسَخُ | فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ج | الشَّيْطٰنُ | اَلْقَى |
| डालता है | उसे जो | अल्लाह | पस मिटा देता है | उसके पढ़ने में | शैतान ने | डाल दिया |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حَكِيْمٌ (52) لا | عَلِيْمٌ | وَاللّٰهُ | اٰيٰتِهٖ ط | اللّٰهُ | يُحْكِمُ | ثُمَّ | الشَّيْطٰنُ |
| ख़ूब हिकमत वाला है | ख़ूब इल्म वाला है | और अल्लाह | आयात अपनी | अल्लाह | मज़बूत करता है | फिर | शैतान |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْ قُلُوْبِهِمْ | لِّلَّذِيْنَ | فِتْنَةً | الشَّيْطٰنُ | يُلْقِى | مَا | لِّيَجْعَلَ |
| जिनके दिलों में | उन लोगों के लिए | एक आज़माइश | शैतान | डालता है | उसे जो | ताकि वो बना दे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَفِيْ شِقَاقٍۭ | الظّٰلِمِيْنَ | وَاِنَّ | قُلُوْبُهُمْ ط | وَّالْقَاسِيَةِ | مَّرَضٌ |
| अलबत्ता मुख़ालिफ़त में हैं | ज़ालिम लोग | और यक़ीनन | दिल उनके | और सख़्त हैं | बीमारी है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْحَقُّ | اَنَّهُ | الْعِلْمَ | اُوْتُوا | الَّذِيْنَ | وَّلِيَعْلَمَ | بَعِيْدٍ (53) لا |
| हक़ है | कि बेशक वो | इल्म | दिए गए | वो लोग जो | और ताकि जान लें | दूर की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِنَّ | قُلُوْبُهُمْ ط | لَهٗ | فَتُخْبِتَ | بِهٖ | فَيُؤْمِنُوْا | مِنْ رَّبِّكَ |
| और बेशक | दिल उनके | उसके लिए | फिर आजिज़ी करें | उस पर | फिर वो ईमान ले आएं | आपके रब की तरफ़ से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا يَزَالُ | مُّسْتَقِيْمٍ (54) | اِلٰى صِرَاطٍ | اٰمَنُوْٓا | الَّذِيْنَ | لَهَادِ | اللّٰهَ |
| और हमेशा रहेंगे | सीधे के | तरफ़ रास्ते | ईमान लाए | उनको जो | अलबत्ता राह दिखाने वाला है | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّاعَةُ | تَاْتِيَهُمُ | حَتّٰى | مِّنْهُ | فِيْ مِرْيَةٍ | كَفَرُوْا | الَّذِيْنَ |
| घड़ी | आ जाएगी उनके पास | यहां तक कि | उसकी तरफ़ से | शक में | कुफ़्र किया | वो जिन्होंने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَوْمَئِذٍ | اَلْمُلْكُ | عَقِيْمٍ (55) | يَوْمٍ | عَذَابُ | يَاْتِيَهُمْ | اَوْ | بَغْتَةً |
| उस दिन (होगी) | बादशाहत | बांझ का | दिन | अज़ाब | आ जाएगा उनके पास | या | अचानक |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الصّٰلِحٰتِ | وَعَمِلُوا | اٰمَنُوْا | فَالَّذِيْنَ | بَيْنَهُمْ ط | يَحْكُمُ | لِلّٰهِ ط |
| नेक | और उन्होंने अमल किए | ईमान लाए | पस वो लोग जो | दर्मियान उनके | वो फ़ैसला करेगा | अल्लाह के लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاُولٰٓئِكَ | بِاٰيٰتِنَا | وَكَذَّبُوْا | كَفَرُوْا | وَالَّذِيْنَ | النَّعِيْمِ (56) | فِيْ جَنّٰتِ |
| तो यही लोग हैं | हमारी आयात को | और झुठलाया | कुफ़्र किया | और वो जिन्होंने | नेअमतों वाली | जन्नतों में (होंगे) |

ع 7 9 14

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ثُمَّ | فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ | هَاجَرُوْا | وَالَّذِيْنَ | مُّهِيْنٌ (57) ع | عَذَابٌ | لَهُمْ |
| फिर | अल्लाह के रास्ते में | हिजरत की | और वो जिन्होंने | रुस्वाकुन | अज़ाब होगा | उनके लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِنَّ | حَسَنًا ط | رِزْقًا | اللّٰهُ | لَيَرْزُقَنَّهُمُ | مَاتُوْا | اَوْ | قُتِلُوْٓا |
| और बेशक | अच्छा | रिज़्क़ | अल्लाह | अलबत्ता ज़रूर रिज़्क़ देगा उन्हें | वो मर गए | या | वो क़त्ल किए गए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مُّدْخَلًا | لَيُدْخِلَنَّهُمْ | الرّٰزِقِيْنَ (58) | خَيْرُ | لَهُوَ | اللّٰهَ |
| दाख़िल होने की जगह | अलबत्ता वो ज़रूर दाख़िल करेगा उन्हें | सब रिज़्क़ देने वालों से | बेहतर है | अलबत्ता वो ही | अल्लाह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَاقَبَ | وَمَنْ | ذٰلِكَ ج | حَلِيْمٌ (59) | لَعَلِيْمٌ | اللّٰهَ | وَاِنَّ | يَّرْضَوْنَهٗ ط |
| बदला ले | और जो कोई | ये है | ख़ूब हिल्म वाला है | अलबत्ता ख़ूब इल्म वाला है | अल्लाह | और बेशक | वो पसंद करेंगे जिसे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَيَنْصُرَنَّهُ | عَلَيْهِ | بُغِيَ | ثُمَّ | بِهٖ | عُوْقِبَ | مَا | بِمِثْلِ |
| अलबत्ता ज़रूर मदद करेगा उसकी | उस पर | ज़्यादती की गई | फिर | उसे | सताया गया | जो | मानिंद उसके |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | بِاَنَّ | ذٰلِكَ | غَفُوْرٌ (60) | لَعَفُوٌّ | اللّٰهَ | اِنَّ | اللّٰهُ ط |
| अल्लाह | बवजह इसके कि | ये | बहुत बख़्शने वाला है | अलबत्ता बहुत माफ़ करने वाला है | अल्लाह | बेशक | अल्लाह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | وَاَنَّ | فِي الَّيْلِ | النَّهَارَ | وَيُوْلِجُ | فِي النَّهَارِ | الَّيْلَ | يُوْلِجُ |
| अल्लाह | और बेशक | रात में | दिन को | और वो दाख़िल करता है | दिन में | रात को | वो दाख़िल करता है |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | وَاَنَّ | الْحَقُّ | هُوَ | اللّٰهَ | بِاَنَّ | ذٰلِكَ | بَصِيْرٌ (61) | سَمِيْعٌۢ |
| जिसे | और बेशक | हक़ है | वो ही | अल्लाह | बवजह इसके कि | ये | ख़ूब देखने वाला है | ख़ूब सुनने वाला है |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| يَدْعُوْنَ | مِنْ دُوْنِهٖ | هُوَ | الْبَاطِلُ | وَاَنَّ | اللّٰهَ | هُوَ | الْعَلِيُّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वो पुकारते हैं | उसके सिवा | वो | बातिल है | और बेशक | अल्लाह | वो ही | बहुत बुलंद है |

| الْكَبِيْرُ ﴿62﴾ | اَلَمْ | تَرَ | اَنَّ | اللّٰهَ | اَنْزَلَ | مِنَ السَّمَآءِ | مَآءً ز |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत बड़ा है | क्या नहीं | आपने देखा | बेशक | अल्लाह ने | उतारा | आसमान से | पानी |

| فَتُصْبِحُ | الْاَرْضُ | مُخْضَرَّةً ط | اِنَّ | اللّٰهَ | لَطِيْفٌ | خَبِيْرٌ ﴿63﴾ ج |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हो जाती है | ज़मीन | सरसब्ज़ | बेशक | अल्लाह | बहुत बारीकबीन है | ख़ूब ख़बर रखने वाला है |

| لَهٗ | مَا | فِي السَّمٰوٰتِ | وَمَا | فِي الْاَرْضِ ط | وَاِنَّ | اللّٰهَ | لَهُوَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसी के लिए है | जो कुछ | आसमानों में है | और जो कुछ | ज़मीन में है | और बेशक | अल्लाह | अलबत्ता वो |

| الْغَنِيُّ | الْحَمِيْدُ ﴿64﴾ ع | اَلَمْ | تَرَ | اَنَّ | اللّٰهَ | سَخَّرَ | لَكُمْ | مَّا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत बेनियाज़ है | बहुत तारीफ़ वाला है | क्या नहीं | आपने देखा | बेशक | अल्लाह ने | मुसख़्ख़र किया | तुम्हारे लिए | जो कुछ |

ع 8 7 15

| فِي الْاَرْضِ | وَالْفُلْكَ | تَجْرِيْ | فِي الْبَحْرِ | بِاَمْرِهٖ ط | وَيُمْسِكُ | السَّمَآءَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में है | और कश्तियों को | जो चलती है | समुन्दर में | उसके हुक्म से | और वो थामे रखता है | आसमान को |

| اَنْ | تَقَعَ | عَلَى الْاَرْضِ | اِلَّا | بِاِذْنِهٖ ط | اِنَّ | اللّٰهَ | بِالنَّاسِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इससे कि | वो गिर पड़े | ज़मीन पर | मगर | उसके इज़्न से | बेशक | अल्लाह | साथ लोगों के |

| لَرَءُوْفٌ | رَّحِيْمٌ ﴿65﴾ | وَهُوَ | الَّذِيْٓ | اَحْيَاكُمْ ز | ثُمَّ |
|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता बहुत शफ़क़त करने वाला है | निहायत रहम करने वाला है | और वही है | जिसने | ज़िंदा किया तुम्हें | फिर |

| يُمِيْتُكُمْ | ثُمَّ | يُحْيِيْكُمْ ط | اِنَّ | الْاِنْسَانَ | لَكَفُوْرٌ ﴿66﴾ | لِكُلِّ | اُمَّةٍ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वो मौत देगा तुम्हें | फिर | वो ज़िंदा करेगा तुम्हें | यक़ीनन | इंसान | अलबत्ता बहुत नाशुक्रा है | वास्ते हर | उम्मत के |

| جَعَلْنَا | مَنْسَكًا | هُمْ | نَاسِكُوْهُ | فَلَا | يُنَازِعُنَّكَ | فِي الْاَمْرِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुक़र्रर किया हमने | इबादत का तरीक़ा | वो | चलने वाले हैं उस पर | तो ना | वो हरगिज़ झगड़ा करें आप से | इस मामले में |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِنْ | مُّسْتَقِيْمٍ (67) | هُدًى | لَعَلٰى | اِنَّكَ | اِلٰى رَبِّكَ ؕ | وَادْعُ |
| और अगर | सीधी के हैं | हिदायत | अलबत्ता ऊपर | बेशक आप | तरफ़ अपने रब के | और दावत दीजिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَحْكُمُ | اَللّٰهُ | تَعْمَلُوْنَ (68) | بِمَا | اَعْلَمُ | اللّٰهُ | فَقُلِ | جٰدَلُوْكَ |
| वो फ़ैसला करेगा | अल्लाह | तुम अमल करते हो | उसे जो | ज़्यादा जानता है | अल्लाह | तो कह दीजिए | वो झगड़ा करें आपसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَخْتَلِفُوْنَ (69) | فِيْهِ | كُنْتُمْ | فِيْمَا | الْقِيٰمَةِ | يَوْمَ | بَيْنَكُمْ |
| तुम इख़्तिलाफ़ करते | उसमें | थे तुम | उस मामले में जो | क़यामत के | दिन | दर्मियान तुम्हारे |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّ | وَالْاَرْضِ ؕ | فِى السَّمَآءِ | مَا | يَعْلَمُ | اللّٰهَ | اَنَّ | تَعْلَمْ | اَلَمْ |
| बेशक | और ज़मीन में है | आसमान में | जो कुछ | जानता है | अल्लाह | कि बेशक | आप जानते | क्या नहीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيَعْبُدُوْنَ | يَسِيْرٌ (70) | عَلَى اللّٰهِ | ذٰلِكَ | اِنَّ | فِىْ كِتٰبٍ ؕ | ذٰلِكَ |
| और वो इबादत करते हैं | बहुत आसान है | अल्लाह पर | ये | बेशक | एक किताब में है | ये |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَيْسَ | وَّمَا | سُلْطٰنًا | بِهٖ | يُنَزِّلْ | لَمْ | مَا | اللّٰهِ | مِنْ دُوْنِ |
| नहीं है | और उसकी जो | कोई दलील | जिसकी | उसने नाज़िल की | नहीं | उसकी जो | अल्लाह के | सिवाए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تُتْلٰى | وَاِذَا | مِنْ نَّصِيْرٍ (71) | لِلظّٰلِمِيْنَ | وَمَا | عِلْمٌ ؕ | بِهٖ | لَهُمْ |
| पढ़ी जाती हैं | और जब | कोई मददगार | ज़ालिमों के लिए | और नहीं | कोई इल्म | जिसका | उनके लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوا | الَّذِيْنَ | فِىْ وُجُوْهِ | تَعْرِفُ | بَيِّنٰتٍ | اٰيٰتُنَا | عَلَيْهِمْ |
| कुफ़्र किया | उनके जिन्होंने | चेहरों में | आप पहचान सकते हैं | वाज़ेह | आयात हमारी | उन पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰيٰتِنَا ؕ | عَلَيْهِمْ | يَتْلُوْنَ | بِالَّذِيْنَ | يَسْطُوْنَ | يَكَادُوْنَ | الْمُنْكَرَ ؕ |
| आयात हमारी | उन पर | पढ़ते हैं | उन पर जो | कि वो हमला कर दें | क़रीब हैं | नागवारी को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهُ | وَعَدَهَا | اَلنَّارُ ؕ | مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ | بِشَرٍّ | اَفَاُنَبِّئُكُمْ | قُلْ |
| अल्लाह ने | वादा किया है उसका | आग | उससे | बुरी चीज़ | क्या फिर मैं बताऊं तुम्हें | कह दीजिए |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 9 8 16

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا ط | وَبِئْسَ | الْمَصِيْرُ ﴿72﴾ ع | يٰۤاَيُّهَا | النَّاسُ | ضُرِبَ |
| उनसे जिन्होंने | कुफ़्र किया | और कितना बुरा है | ठिकाना | ऐ | लोगो | बयान की गई है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَثَلٌ | فَاسْتَمِعُوْا | لَهٗ ط | اِنَّ | الَّذِيْنَ | تَدْعُوْنَ | مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ |
| एक मिसाल | पस ग़ौर से सुनो | उसे | बेशक | वो जिन्हें | तुम पुकारते हो | अल्लाह के सिवा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَنْ | يَّخْلُقُوْا | ذُبَابًا | وَّلَوِ | اجْتَمَعُوْا | لَهٗ ط | وَاِنْ | يَّسْلُبْهُمُ |
| हरगिज़ नहीं | वो पैदा कर सकते | एक मक्खी | और अगरचे | वो जमा हो जाएं | उसके लिए | और अगर | छीन ले उनसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الذُّبَابُ | شَيْـًٔا | لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ | مِنْهُ ط | ضَعُفَ | الطَّالِبُ |
| मक्खी | कोई चीज़ | नहीं वो छुड़ा सकते उसको | उससे | कितना कमज़ोर है | तलब करने वाला |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْمَطْلُوْبُ ﴿73﴾ | مَا | قَدَرُوا | اللّٰهَ | حَقَّ | قَدْرِهٖ ط | اِنَّ | اللّٰهَ |
| और वो जिससे तलब किया जाता है | नहीं | उन्होंने क़द्र की | अल्लाह की | जैसे हक़ है | उसकी क़द्र का | बेशक | अल्लाह |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَقَوِيٌّ | عَزِيْزٌ ﴿74﴾ | اَللّٰهُ | يَصْطَفِيْ | مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ | رُسُلًا |
| अलबत्ता बहुत क़ुव्वत वाला है | बहुत ज़बरदस्त है | अल्लाह | चुन लेता है | फ़रिश्तों में से | पैग़ाम पहुंचाने वाले |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّمِنَ النَّاسِ ط | اِنَّ | اللّٰهَ | سَمِيْعٌۢ | بَصِيْرٌ ﴿75﴾ ج | يَعْلَمُ | مَا |
| और इंसानों में से भी | बेशक | अल्लाह | ख़ूब सुनने वाला है | ख़ूब देखने वाला है | वो जानता है | जो कुछ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ | وَمَا | خَلْفَهُمْ ط | وَاِلَى اللّٰهِ | تُرْجَعُ | الْاُمُوْرُ ﴿76﴾ |
| उनके आगे है | और जो कुछ | उनके पीछे है | और तरफ़ अल्लाह ही के | लौटाए जाते हैं | सब काम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوا | ارْكَعُوْا | وَاسْجُدُوْا | وَاعْبُدُوْا | رَبَّكُمْ | وَافْعَلُوا |
| ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | रुकूअ करो | और सज्दा करो | और इबादत करो | अपने रब की | और करो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْخَيْرَ | لَعَلَّكُمْ | تُفْلِحُوْنَ ﴿77﴾ ج السجدة | وَجَاهِدُوْا | فِى اللّٰهِ | حَقَّ |
| भलाई | ताकि तुम | फ़लाह पा जाओ | और जिहाद करो | अल्लाह (के रास्ते) में | (जैसा कि) हक़ है |

السجدة عند الشافعی

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِى الدِّيْنِ | عَلَيْكُمْ | جَعَلَ | وَمَا | اجْتَبٰىكُمْ | هُوَ | جِهَادِهٖ ؕ |
| दीन के मामले में | तुम पर | उसने बनाई | और नहीं | चुन लिया है तुम्हें | उसने | उसके जिहाद का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُسْلِمِيْنَ ۙ | سَمّٰىكُمُ | هُوَ | اِبْرٰهِيْمَ ؕ | اَبِيْكُمْ | مِلَّةَ | مِنْ حَرَجٍ ؕ |
| मुसलमान | नाम रखा है तुम्हारा | उस (अल्लाह) ने | इब्राहीम का | तुम्हारे बाप | ये दीन है | कोई तंगी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَتَكُوْنُوْا | عَلَيْكُمْ | شَهِيْدًا | الرَّسُوْلُ | لِيَكُوْنَ | وَفِىْ هٰذَا | مِنْ قَبْلُ |
| और तुम हो जाओ | तुम पर | गवाह | रसूल | ताकि हों | और इस में (भी) | इस से पहले (भी) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاعْتَصِمُوْا | الزَّكٰوةَ | وَاٰتُوا | الصَّلٰوةَ | فَاَقِيْمُوا | عَلَى النَّاسِ ۚۖ | شُهَدَآءَ |
| और मज़बूत थाम लो | ज़कात | और अदा करो | नमाज़ | पस क़ायम करो | तमाम इंसानों पर | गवाह |

10 ع 6 17

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| النَّصِيْرُ ﴿78﴾ ع | وَنِعْمَ | الْمَوْلٰى | فَنِعْمَ | مَوْلٰىكُمْ ۚ | هُوَ | بِاللّٰهِ ؕ |
| मददगार | और कितना अच्छा है | मौला/दोस्त | पस कितना अच्छा है | मौला है तुम्हारा | वो ही | अल्लाह को |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION